Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1 तेरी है जमीं

प्रस्तुत कविता एक प्रार्थना गीत है। जिसमें ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त हुआ है। साथ ही ईश्वर की सर्वोपरिता को स्वीकार किया गया है।

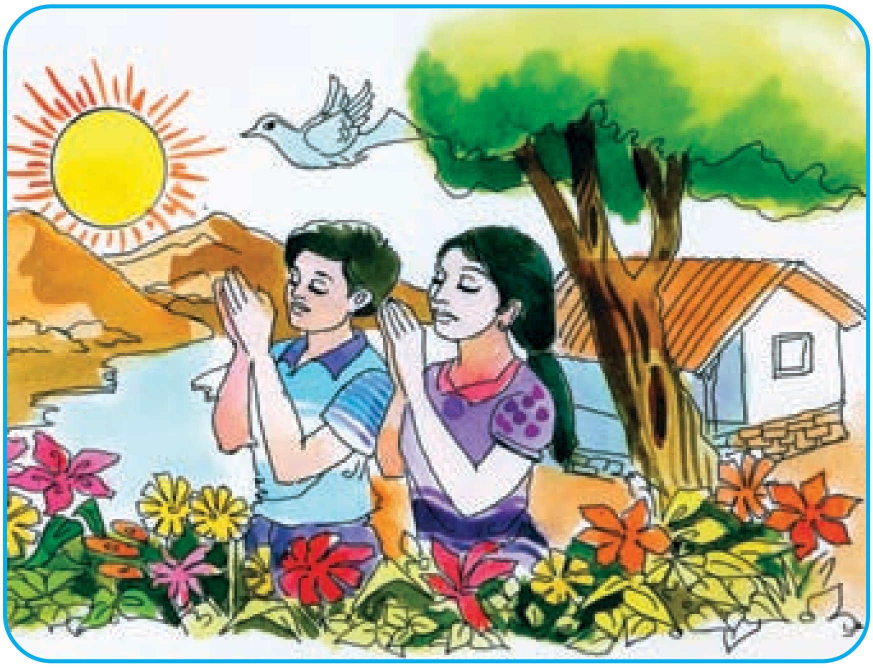

तेरी है जमीं, तेरा आसमान,
तू बड़ा मेहरबाँ, तू बख्शीश कर।
सभी का है तू, सभी तेरे,
खुदा मेरे, तू बख्शीश कर।
तेरी मर्जी से ए मालिक,
हम इस दुनिया में आए हैं।
तेरी रहमत से हम सबने,
ये जिस्म-ओ-जाँ पाए हैं।
तू अपनी नजर हम पर रखना
किस हाल में हैं, ये खबर रखना,...
तेरी है जमीं

तू चाहे तो हमें रखे, तू चाहे तो हमें मारे,
तेरे आगे झुका के सर, खड़े हैं आज हम सारे
ओ सबसे बड़ी ताकतवाले,
तू चाहे तो हर आफत टाले
तेरी है जमीं

शब्दार्थ

बख्शीश भेंट, उपहार, क्षमा करना **मालिक** स्वामी, ईश्वर **रहमत** कृपा **आफत** मुश्किल, संकट **मेहरबाँ** कृपालु, दयालु **जिस्म** शरीर, **जाँ** प्राण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास

1. **यह प्रार्थना छात्रों को टेपरिकार्डर या मोबाईल के जरिए सुनाइए और इसका समूहगान करवाइए।**
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**
   (1) आपके मत से सृष्टि में सर्वोपरि कौन है ? क्यों ?
   (2) आप भगवान से क्या प्रार्थना करते हैं ?
   (3) आप ईश्वर से प्रार्थना किस समय करते हैं ? क्यों ?
   (4) भिन्न-भिन्न धर्म के लोग प्रार्थना करने के लिए कहाँ–कहाँ जाते हैं ?
3. **निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश–क्रम के अनुसार लिखिए :**
   हृदय, मनुष्य, सुख, शांति, मित्र डॉक्टर, दृष्टि, योद्धा, शृंखला, नाविक, और, धन, क्षमता, उज्ज्वल, मंदिर, दूध, स्वर, धरा
4. **इस चित्र की मदद से एक कविता की रचना कीजिए :**

5. **वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए :**
   (1) मैंने कविता लिखी।
   (2) यह मेरी किताब है।
   (3) इसे लड्डू दे दो।

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**
   (1) कवि ईश्वर से क्या चाहते हैं ?
   (2) 'तू अपनी नज़र हम पर रखना' ऐसा कवि क्यों कहते हैं ?
   (3) कवि किसे सबसे ताकतवाला मानते हैं ? क्यों ?
   (4) कवि खुद से क्या कहना चाहते हैं ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. दिए गए भाव के आधार पर काव्य पंक्तियाँ लिखिए :

(1) हे ईश्वर ! तेरी कृपा से मुझे शरीर और प्राण मिले हैं। चाहे जो भी हो, तुम अपनी कृपा दृष्टि हम पर सदा रखना।

(2) हे प्रभु ! ये सारा संसार तेरा है, तू बड़ा दयालु है। तू हम पर अपनी दया दृष्टि रखना।

3. अपूर्ण काव्य पूर्ण कीजिए :

मेरी प्यारी-प्यारी गाय
घर की राज दुलारी गाय
____
____

4. यह गीत हिन्दी फिल्म 'द बर्निंग ट्रेन' से लिया गया है। तुमने इस प्रकार की और भी प्रार्थनाएँ सुनी होंगी । ऐसी ही कोई और प्रार्थना लिखो जो कि किसी फिल्म में हो।

5. इस प्रार्थना को अपनी मातृभाषा में लिखिए।

भाषा-सज्जता

- **वचन परिवर्तन**
- **निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए और समझिए :**

ताला–ताले	कमरा–कमरे
लड़का–लड़के	छाता–छाते
घोड़ा–घोड़े	तोता–तोते
बेटा–बेटे	रुपया–रुपए

उपर्युक्त शब्दों को पढ़ने से पता चलता है कि आकारांत पुल्लिंग शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंतिम 'आ' को 'ए' कर दिया जाता है।

रात–रातें	दीवार–दीवारें
बहन–बहनें	आँख–आँखें
किताब–किताबें	सड़क–सड़कें
भैंस–भैंसें	बात–बातें

इन शब्दों को पढ़ने से पता चलता है कि अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन करने के लिए शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़ दिया जाता है।

लता–लताएँ	सेवा–सेवाएँ
कन्या–कन्याएँ	बालिका–बालिकाएँ
बाला–बालाएँ	भाषा–भाषाएँ
महिला–महिलाएँ	पाठशाला–पाठशालाएँ

यहाँ हम देख सकते हैं कि आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए भी शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़ दिया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तिथि–तिथियाँ	जाति–जातियाँ
विधि–विधियाँ	पंक्ति–पंक्तियाँ
लिपि–लिपियाँ	नीति–नीतियाँ

यहाँ हम देख सकते हैं कि 'इकारांत' स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है।

सखी–सखियाँ	चींटी–चींटियाँ
खिड़की–खिड़कियाँ	डाली–डालियाँ
मछली–मछलियाँ	कली–कलियाँ

'ईकारान्त' स्त्रीलिंग शब्द का बहुवचन करने के लिए शब्द के अंत के 'ई' को 'इ' करके 'याँ' जोड़ दिया जाता है।

पुड़िया–पुड़ियाँ	चिड़िया–चिड़ियाँ
चुहिया–चुहियाँ	डिबिया–डिबियाँ
बुढ़िया–बुढ़ियाँ	गुड़िया–गुड़ियाँ

'इया' अंत वाले स्त्रीलिंग शब्द का बहुवचन करने के लिए शब्द के अंतिम 'या' को 'याँ' कर दिया जाता है।

→ **उकारांत शब्द –**

वस्तु–वस्तुएँ धेनु–धेनुएँ ऋतु–ऋतुएँ

उकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़ने से बहुवचन बनता है।

→ **ऊकारांत शब्द –**

वधू–वधुएँ जू–जुएँ

'ऊकारांत' स्त्रीलिंग शब्दों में 'ऊ' का 'उ' करके 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है।

→ **औकारांत शब्द –**

गौ–गौएँ

'औकारांत' स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' लगाकर के बहुवचन बनाया जाता है।

प्रजा–प्रजाजन	गुरु–गुरुजन	छात्र–छात्रगण
पाठक–पाठकगण	श्रोता – श्रोतागण	कवि–कविगण
लेखक–लेखकवृंद	अध्यापक–अध्यापकवृंद	
मजदूर–मजदूरवर्ग	शिक्षक–शिक्षकवर्ग	

एक वर्ग, दल या समूह का बोध कराने के लिए कुछ एकवचन शब्दों के अंत में गण, वर्ग, वृंद, जन जैसे शब्द जोड़ दिए जाते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

❤ उपर्युक्त नियमों के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का वचन परिवर्तन कीजिए।

(1) नदी	= ________	(5) कौआ	= ________
(2) किताब	= ________	(6) धातुएँ	= ________
(3) दरवाजे	= ________	(7) सड़कें	= ________
(4) कला	= ________	(8) कुत्ता	= ________

❤ उपसर्ग

☞ **पढ़िए और समझिए :**

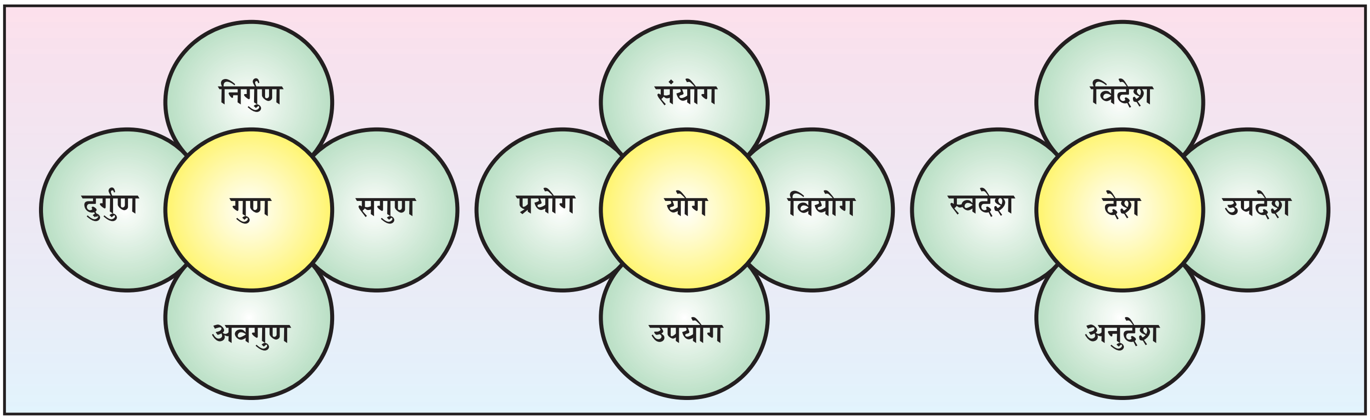

निर्देशित उदाहरणों में 'गुण', 'योग' और 'देश' शब्दों से,पहले कुछ शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाए हैं। आइए देखें –

	शब्दांश	नया शब्द	शब्दांश	नया शब्द
(क)	दुर्	+ गुण = दुर्गुण,	निर्	+ गुण = निर्गुण,
	स	+ गुण = सगुण,	अव	+ गुण = अवगुण
(ख)	प्र	+ योग = प्रयोग,	सम्	+ योग = संयोग
	वि	+ योग = वियोग,	उप	+ योग = उपयोग
(ग)	स्व	+ देश = स्वदेश,	वि	+ देश = विदेश
	उप	+ देश = उपदेश	अनु	+ देश = अनुदेश

'दुर्', 'निर्', 'स', 'अव', 'प्र', 'सम्', 'वि', 'उप', 'स्व' तथा 'अनु' ऐसे शब्दांश हैं, जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता इन्हें केवल शब्दों के प्रारंभ में ही जोड़ा जा सकता है।

शब्द के प्रारंभ में जुड़ने से ये उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं तथा नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

'उपसर्ग' वे शब्दांश हैं जो सार्थक शब्दों से पूर्व जुड़ने पर अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

☞ **निम्नलिखित उपसर्गों को पढ़कर समझिए :**

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	कभी नहीं, निषेध	अज्ञान, अगम, अमर, अछूत, अचूक
अन	नहीं, अभाव, निषेध	अनपढ़, अनहोनी, अनजान, अनमोल
क	बुरा/बुरी	कपूत
कु	बुरा/बुरी	कुपुत्र, कुसंग, कुकर्म, कुसमय
नि	अभाव, नहीं	निकम्मा, निडर, निठल्ला, निहत्था
पर	पराया, दूसरा, दूसरी पीढ़ी का	परदेश, परलोक, परदादा, परपोता
स	सहित, अच्छा	सपूत, सपरिवार, सुविचार, सकाम
अध	आधा	अधपका, अधमरा, अधजला, अधखिला
दु	बुरा, दोगुना	दुखद, दुबला, दुःस्वप्न, दुगुना
बिन	बिना, निषेध	बिनबात, बिनब्याहा, बिनमाँगे, बिनकहे
भर	पूरा, ठीक	भरपेट, भरमार, भरपूर, भरचक
चौ	चार	चौराहा, चौमासा, चौकोर, चौपाई

● **निम्नलिखित उपसर्गों के योग से तीन-तीन शब्द बनाइए :**

(1) चौ (2) बिन (3) पर (4) अन (5) अध

☞ **पढ़िए और समझिए :**

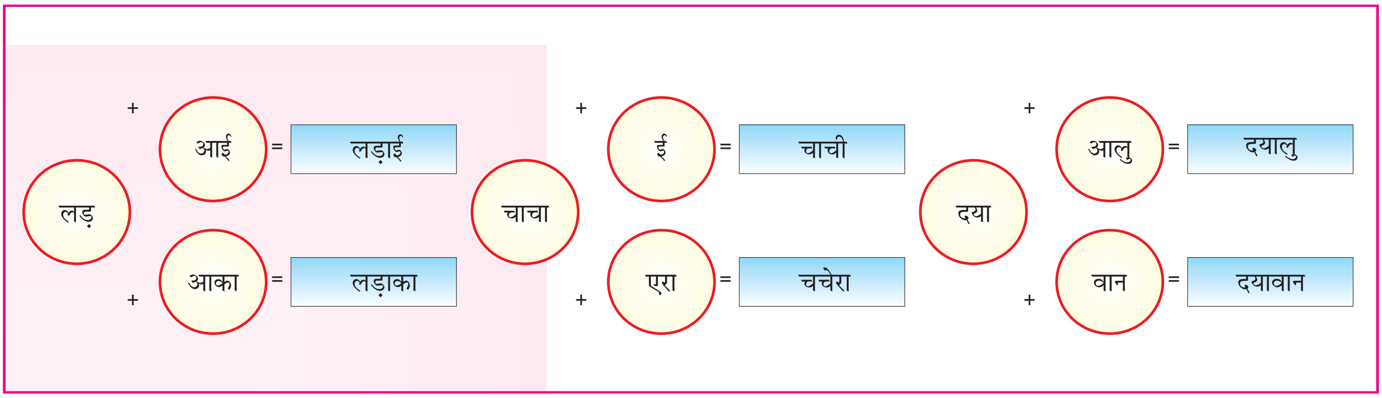

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपर्युक्त उदाहरणों में 'लड़', 'चाचा' और 'दया' शब्दों में क्रमश: 'आई', 'ई', तथा 'आलु' शब्दांशों का प्रयोग करके नए शब्द बनाए गए हैं–

लड़ + आई = लड़ाई;   चाचा + ई = चाची;   दया + आलु = दयालु

लड़ + आका = लड़ाका;   चाचा + एरा = चचेरा;   दया + वान = दयावान

'लड़', 'चाचा' तथा 'दया' शब्दों के अंत में जोड़े गए 'आई', 'ई', 'आलु' शब्दांश, प्रत्यय हैं।

ऐसे शब्दांश जो शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय के योग से बना नया शब्द
चल	ता	चलता
खा	या	खाया
सुन	कर	सुनकर
पढ़	आई	पढ़ाई
खेल	औना	खिलौना
गाड़ी	वाला	गाड़ीवाला
भूख	आ	भूखा
लड़का	पन	लड़कपन
इन्सान	इयत	इन्सानियत
खाट	इया	खटिया
बल	शाली	बलशाली
झगड़ा	आलू	झगड़ालू
बाबू	आइन	बबुआइन
शेर	नी	शेरनी
भीख	आरी	भिखारी

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय ढूँढ़िए :

मनुष्यता, धनवान, रसोइया, टोकरी, इकहरा, धोखेबाज, बलवती, भाग्यवान

योग्यता-विस्तार

☞ छात्र के लिए :

भिन्न-भिन्न प्रार्थनाओं का संकलन कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 ईदगाह

प्रेमचंद

(जन्म : सन् 1880 निधन : सन् 1936)

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म वाराणसी (उ.प्र.) के पास लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका बचपन का नाम धनपतराय था। आरंभ में वे 'नवाबराय' उपनाम से उर्दू में लिखते थे। बाद में 'प्रेमचंद' नाम से हिन्दी में लिखने लगे। मैट्रिक उत्तीर्ण होते ही अध्यापक बने किन्तु गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय होने के लिए उन्होंने सरकारी नौकरी त्याग दी थी।

'गोदान' प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' – भाग 1 से 8 में संकलित हैं। साहित्य में प्रगतिवाद चेतना को उजागर करने के लिए 'जागरण' तथा 'हंस' पत्रिकाओं का संपादन किया था। प्रेमचंद की भाषा बोलचाल के निकट की है।

'ईदगाह' प्रेमचंद की अमर कहानी है। कहानी का बाल–नायक हामिद अपने दोस्तों के साथ ईदगाह जाता है। जब अन्य बच्चे खिलौने और मिठाई खरीदते हैं, हामिद अपनी बाल–सहज इच्छाओं का दमन करके अपनी दादी अमीना के लिए चिमटा खरीदता है। इसमें दादी के प्रति प्रेम तथा उपयोगी चीज खरीदने की विवेकपूर्ण बुद्धिमता प्रकट होती है। पाठकगण बालक हामिद के त्याग, सद्भाव और विवेक को देखकर भावविभोर हो जाते हैं।

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है, गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सूई–धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

के जूते कड़े हो गये हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के पास भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दोपहर के पहले लौटना असंभव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोजे बड़े-बूढों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब में से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख देते हैं। महमूद गिनता है, एक - दो - दस - बारह उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक-दो-आठ-नौ-पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों से अनगिनत चीजें लाएँगे। खिलौना,मिठाइयाँ, गेंद, और जाने क्या-क्या। और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। गरीब सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया। फिर एक दिन माँ भी मर गई, अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में है और उतना ही प्रसन्न है।

हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है। फिर भी वह प्रसन्न है। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था, इस निगोड़ी ईद को।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव में बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवाय और कौन है? उसे कैसे अकेले जाने दे ? उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्हीं-सी जान, तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं है। कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुए में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार। अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है, - "तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा।"

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी दौड़कर आगे निकल जाता। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथवालों का इंतजार करता। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता था !

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगी। यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह कलाघर है, आगे चलें। हलवाइयों की दुकानें शुरू हुई। आज खूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है? देखो न, एक एक दुकान पर मनों होंगी।

सहसा ईदगाह नज़र आई, इमली के घने वृक्षों की छाया है, नीचे पक्का फर्श है, उस पर जाजिम बिछी हुई है। रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुंदर संचालन है, कितनी सुंदर व्यवस्था। हजारों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। मानो भ्रातृत्त्व का एक सूत्र समस्त आत्माओं को एक कड़ी में पिरोये हुए है।

नमाज खत्म हो गई, लोग आपस में गले मिल रहे हैं। अब मिठाइयाँ और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होता है, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चरखी है। लकड़ी के हाथी, घोड़े, और ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी इन घोड़ों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई जरा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चरखियों से उतरते हैं। खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं। सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन। वाह, लगता है अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए मालूम होता है अभी कवायत किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है।

नूरे को वकील से प्रेम है। काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। ये सब दो-दो पैसों के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने किस काम के? उन्हें लेकर वह क्या करेगा?

खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब-जामुन, किसी ने सोहनहलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता! ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं है। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाते हैं। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे तो कितनी प्रसन्न होंगी फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा! व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो ख़ुशी होती है, फिर तो खिलौनों की ओर कोई आँख उठाकर नहीं देखता। या फिर घर पहुँचते - पहुँचते टूट-फूटकर बरबाद हो जाएँगे। चिमटा कितने काम की चीज़ है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग माँगने आए तो चट-पट चूल्हे से आग निकाल कर उसे दे दो। अम्मा बेचारी को कहाँ फुरसत है कि बाज़ार जाएँ और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज हाथ जला लेती हैं।

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ चलो। मेरा यह काम करो, मेरा वह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप का मुहँ सड़ेगा, फोड़े-फुंसियाँ निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसा चुराएँगे और मार खाएँगे। अम्मा चिमटा देखकर मेरे हाथ से लेंगी और

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहेंगी, – 'मेरा बच्चा, अम्मा के लिए चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ देगा ? बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरन्त सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं हैं तो क्या ? मैं गरीब सही, किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता।

उसने दुकानदार से पूछा ''यह चिमटा कितने का है ?''

''छ: पैसे लगेंगे।''

हामिद का दिल बैठ गया। फिर भी बोला – ''ठीक-ठीक बताओ।''

''ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे। लेना है तो लो, नहीं तो चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा, ''तीन पैसे लोगे ?'' और वह आगे बढ़ गया ताकि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है। फिर शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास गया।

मोहसिन ने हँसकर कहा, ''यह चिमटा क्यों लाया बुद्धू ? इसका क्या करेगा ?''

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटककर कहा– जरा अपना भिस्ती तो जमीन पर गिराओ, सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला, ''तो यह चिमटा कोई खिलौना है ?''

हामिद – ''खिलौना क्यों नहीं है ? अभी कंधे पर रखा बंदूक हो गई, हाथ में ले लिया फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगाएँ मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। बहादुर शेर है – मेरा चिमटा।'' सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला, ''मेरी खँजरी से बदलोगे ? दो आने की है।''

हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा से देखा। बोला, ''मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। ज़रा-सा पानी लग जाए तो खतम हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में तूफान में बराबर डटा रहेगा।''

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं ? फिर मेले से बहुत दूर निकल आए हैं। धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी है। बड़ों से जिद करें तो भी चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए उसने अपने पैसे बचा रखे थे।

औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसों में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा ? टूट-फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा बना रहेगा बरसों!

मोहसिन ने कहा, ''जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।''

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों को मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सब के हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने थे।

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को अपना साथी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गये। यह उस चिमटे का प्रभाव था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेलेवाले लौट आए, मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे।

मियाँ नूरे के वकील का अंत इससे भी ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर बैठ नहीं सकते। उनकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का एक कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर बिराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे होते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो? बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगा। मालूम नहीं पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े जोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थियाँ घूरे पर डाल दी गईं।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसको गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी। बोली, "यह चिमटा कहाँ से लाया?"

"मैनें मोल लिया है।"

"कै पैसे में?"

"तीन पैसे दिए।"

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! "सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?"

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, "तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने लिया।"

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? अमीना का मन गद्गद हो गया। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और उसकी आँखों से आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थीं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

ईदगाह ईद की नमाज़ पढ़ने की जगह **सानी** चारे की सामग्री जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाई जाती है **कुबेर** धन का देवता **अनगिनत** बहुत अधिक, जिसे गिना न जा सके **निगोड़ी** दुष्ट, अनाथ **मन** मण (गुज.), **बिसात** औकात, मूल्य **सिजदा** एक विशेष मुद्रा में झुकना **लड़ी** माला, क्रम **धावा** आक्रमण, हमला **कोष** खजाना **पृथक** अलग **सबील** प्याऊ **जब्त** धीरज, धैर्य

मुहावरे

दिल कचोटना कुछ न पाने पर दु:ख होना **बेड़ा पार लगाना** किनारे ले जाना, संकट से बचाना **गले मिलना** प्रेम से भेंटना **दिल बैठ जाना** हताश या निराश होना **बाल बाँका न होना** जरा भी नुकसान न होना **सुरलोक सिधारना** मर जाना **छाती पीट लेना** दु:ख प्रकट करना

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) हामिद ने चिमटा ही क्यों खरीदा ?

(2) चिमटा खरीदने के लिए हामिद कौन से कारण बताता है?

(3) बूढ़ी अम्मा का क्रोध स्नेह में क्यों बदल गया ?

(4) अब आप चिमटे के प्रयोग की तरह रुमाल के विविध प्रयोग बताइए।

2. इस कहानी का शीर्षक 'ईदगाह' ही क्यों रखा गया? इसके अलावा आप कौन-सा शीर्षक देना चाहेंगे? क्यों ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमारे इतिहास और पुराणों में परोपकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं। दधीचि ने मानव कल्याण तथा असुरों के संहार के लिए अपना शरीर त्याग दिया। राजा शिबि ने पंडूक के प्राण की रक्षा के लिए अंग दान किए। महर्षि दयानंद ने विष मिलाकर प्राण लेनेवाले अपने रसोइए जगन्नाथ के प्राणों की रक्षा धन देकर की। वर्तमान में भी अनेक सामाजिक संस्थाएँ परोपकार के लिए अपना धन और समय भारतीय समाज को दे रही हैं। भारतीय समाज में युगों से परोपकार की सुरसरि प्रवाहित होती आई है। यहाँ ऋषि-मुनियों ने यही सीख दी है कि, निराश्रितों को आसरा दो। दीन-दुखियों और वृद्धों की शारीरिक और आर्थिक मदद करो। भूखों को भोजन करवाओ। विद्वान हो तो विद्या का प्रचार कर समाज का उद्धार करो। यहाँ सदा सबकी भलाई में ही अपनी भलाई मानी जाती रही है। संसार के सभी धर्मों का मूल परोपकार है। किसी भी संत-महात्मा ने इसके बिना मनुष्य जीवन को सार्थक नहीं माना। लोग परोपकार के लिए ही औषधालय, गौशालाएँ और धर्मशालाएँ बनवाते हैं। सभी अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार परोपकार करते रहें तो समाज एवं देश की उन्नति होती रहेगी तथा 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना फैलेगी।

प्रश्न :

(1) ऐतिहासिक ग्रंथों में परोपकार के कौन-कौन से उदाहरण मिलते हैं ?

(2) ऋषि-मुनियों ने हमें क्या सीख दी है ?

(3) देश एवं समाज की उन्नति किस प्रकार होगी ?

(4) विलोम शब्द लिखिए: आश्रित, अवनति

(5) परिच्छेद के आधार पर अपने साथियों से पूछने के लिए तीन प्रश्न बनाइए।

(6) इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए।

4. तुम भी हामिद की तरह किसी न किसी मेले में गए होगे, वहाँ तुमने क्या-क्या खरीदा और क्यों ?

5. यदि तुम्हें मेले से अपनी दादी के लिए कुछ खरीदना हो तो क्या खरीदोगे और क्यों ?

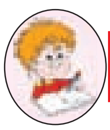

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) रोजे के दिन मुसलमान क्या करते हैं ?

(2) रमजान ईद के दिन मुसलमान लोग कहाँ जाते हैं ?

(3) दुकानों में कौन-कौन से खिलौने मिल रहे थे?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. पेन्सिल में लिखित शब्दों के समानार्थी और विरोधी शब्द लिखिए :

शब्द	शीतल	प्रसन्न	गरीब	अंधकार	स्नेह	पुरानी
समानार्थी						
विरोधी						

3. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

बेड़ा पार लगाना, बाल बाँका न होना, छाती पीट लेना, दिल चीरना

4. रूपरेखा के आधार पर कहानी पूर्ण कीजिए :

एक नगर में दो स्त्रियाँ – एक ही बालक के लिए दावेदार – आपस में तकरार – मामला न्यायाधीश के समक्ष – दोनों की बातें सुनना – न्याय करना – बालक के दो टुकड़े करके बाँट लो – एक स्त्री मौन – दूसरी का रोकर कहना – बच्चे को न काटो – उसे ही दे दो – न्यायाधीश का फैसला – रोती हुई स्त्री को बालक सौंपना।

5. निम्नलिखित अपूर्ण कहानी को अपने शब्दों में पूर्ण कीजिए :

मौसम में ठंडक बढ़ने लगी थी। माँ सोचने लगी कि इस साल ढेर सारे स्वेटर बनाकर बेचने हैं जिससे अंकित की दसवीं कक्षा की फीस और पढ़ाई का खर्चा निकाला जा सके। अंकित के पापा नहीं थे। एक बड़ी बहन थी। अंकित अपने घर में समृद्धि लाने के लिए प्रतिदिन सोचता रहता है...

योग्यता-विस्तार

प्रेमचंद की 'गुल्ली डंडा', 'बड़े भाई' – जैसी कहानियाँ पढ़िए। पतेती, पर्यूषण, नाताल, आदि त्योहारों के बारे में पुस्तकालय से जानकारी प्राप्त करके उनके महत्त्व के बारे में बच्चों को विस्तार से बताइए या छात्रों को स्वयं खोजने के लिए निर्देश कीजिए और कक्षा में उसके बारे में चर्चा कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 अंतरिक्ष परी सुनीता विलियम्स

डॉ. कोकिला पारेख

डॉ. कोकिला पारेख का जन्म सन् 1954 में गाँव उवारसद, जिला गांधीनगर में हुआ था। आपने एम. ए., एम. फिल. और विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) की शिक्षा गूजरात विद्यापीठ से प्राप्त की। आपने गुजराती और हिन्दी दोनों भाषाओं में लेखनकार्य किया है। अध्यापन के साथ समाजसेवा में भी विशेष योगदान है। महिला जागृति में उन्होंने अच्छा कार्य किया है। हिन्दी प्रचार-प्रसार में भी उनका योगदान है। आजकल आप गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में रीडर के पद पर कार्यरत हैं।

प्रस्तुत पाठ में अंतरिक्षयात्रियों की जानकारी के साथ-साथ अंतरिक्ष परी सुनीता विलियम्स के जीवन, शिक्षा, अंतरिक्षयात्रा के लिए परीक्षण, प्रशिक्षण, अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन, सुनीता के अंतरिक्ष रिकार्ड, अहमदाबाद में सुनीता के आगमन और छात्रों को प्रेरणा, लड़कियों और महिलाओं के लिए गौरव, प्रोत्साहन तथा अंतरिक्षयात्रा में उनके द्वारा की गई खोजों के बारे में बताया गया है।

20 सितम्बर, 2007 को अहमदाबाद हवाई अड्डे पर अमरीका से एक हवाई जहाज आ पहुँचा तब अटलांटिस यान पृथ्वी पर पहुँचने जैसी उत्तेजना हुई थी। उसमें था गुजरात का गौरव, भारत की शान और पूरे विश्व की बेटी सुनीता विलियम्स। महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। वह उच्च से उच्च पद पर आसीन तो हैं ही। परम्पराओं की बेड़ी को तोड़कर अपने अस्तित्व को साकार रूप देने की क्षमता आज की नारी में है। युवा पीढ़ी की गौरवशाली परम्परा में अंतरिक्ष पर अपना अस्तित्व स्थापित कर चुकी भारतीय महिला कल्पना चावला के बाद सुनीता विलियम्स का नाम जुड़ा है। सुनीता ने भारत की प्रतिष्ठा को गौरवान्वित किया और सफल होकर वापस आईं।

हमारे देश के हरियाणा प्रांत के करनाल शहर की कल्पना चावला को प्रथम महिला अंतरिक्षयात्री होने का सम्मान मिला था। हमारे राकेश शर्मा भी प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री हैं। दु:ख की बात यह हुई कि कल्पना चावला हौसले की बुलन्दी को छूकर हमारी कल्पना बन गईं। कल्पना के स्वप्न को और खुद के दिवास्वप्न को लक्ष्य बनाकर सुनीता विलियम्स आज इस मुकाम तक पहुँची हैं।

सुनीता का भारतीय होना हमारे लिए गर्व की बात है। उनके नाम के पीछे विलियम्स लगता है तो फिर भारतीय या गुजराती कैसे, यह हमारे मन में प्रश्न उठता है। सुनीता भारतीय नागरिक नहीं हैं परन्तु उनका मूल गुजरात से जुड़ा है। उनके पिता दीपकभाई पंड्या का जन्म गुजरात के मेहसाना ज़िले के झुलासन गाँव में हुआ था। उन्होंने आधी जिन्दगी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुजरात में बिताई, अहमदाबाद में माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा प्राप्त की। डॉक्टरी सेवा देकर 1960 में सदा के लिए अमरीका गए। वे मैसाचूसेट्स के कालमाउथ में प्रसिद्ध न्यूरोसर्जन थे। उन्होंने उर्सबाईन बोनी नामक युगोस्लावियन युवती से शादी की। पिता दीपक पंड्या और माता उर्सबाईन के जय, दीना और सुनीता-तीनों संतानों में सुनीता सब से छोटी हैं।

सुनीता का जन्म 19 दिसम्बर, 1965 ई. को ओह्यो, अमरीका में हुआ था। मुक्त वातावरण में पली सुनीता में साहसिक वृत्तियाँ उभर सकी। सुनीता बचपन से ही दौड़, स्वीमिंग, घुड़दौड़, बाइकिंग, स्नोबोर्डिंग, धनुर्विद्या जैसे साहसभरे खेलों में भाग लेती थी। वह मेहनती थी, शिक्षकों की चहेती थी। घरवाले उसे प्यार से सुनी कहते थे। छः साल की सुनी ने अमरीकी यात्री नील आर्मस्ट्रोंग को चाँद की धरती पर उतरते देखा था तब से मन में निश्चय कर लिया था कि मुझे कुछ ऐसा कर दिखाना है। बचपन का संकल्प उसने साकार किया। उसकी हाई स्कूल की शिक्षा मैसाचूसेट्स से हुई, युनाइटेड स्टेट्स नेवल अकादमी मेरीलैन्ड से भौतिक विज्ञान में स्नातक किया। इंजीनियरिंग मैनेजमेन्ट फ्लोरिडा इन्स्टीट्युट ऑफ टेक्नोलॉजी 1995 में, बाद में अनुस्नातक किया। इसके पहले 1987 में नेवल अकादमी से व्यावसायिक अनुभव के लिए जुड़ी जहाँ साहस और श्रम की प्रवृत्तियों का महत्त्व था। इसके बाद नेवी में एविएशन ट्रेनिंग, अमरीका में कमीशन अधिकारी बेसिक डिवाइंग ऑफिसर का पद मिला। हेलिकोप्टर प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के बाद ऑफिसर इंचार्ज बन गई। सुनीता को युनाइटेड स्टेट्स नेवल टेस्ट पायलट कोर्स के लिए चयनित किया गया, पायलट बनने की सिद्धि को प्रथम कदम माना। अंतरिक्ष पर जाने की तीव्र इच्छा थी। इसलिए हिम्मत नहीं हारी और नासा जाने में सफल हुई, तब से आज तक सुनीता नासा में कार्यरत है। 1998 में अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम में द्वितीय प्रयास में चयन हुआ। दुनिया में हजारों वैज्ञानिक और पायलट हैं पर अंतरिक्षयात्री केवल सौ हैं।

सुनीता ने खास मित्र और सहाध्यायी माइकल विलियम्स से शादी की और सुनीता पंड्या से सुनीता विलियम्स बनीं। माइकल विलियम्स ने सुनीता की सिद्धि में साथ दिया।

सुनीता को अंतरिक्ष परी बनाने में कल्पना चावला ने ही प्रेरणास्रोत का काम किया है। पिछले आठ वर्षों में अंतरिक्षयात्रा पर जानेवाली भारतीय मूल की दूसरी महिला की सकुशल वापसी से लोगों ने राहत की साँस ली। अपनी वापसी के समय उन्होंने कहा था कि नासा के अभियान में कल्पना के साथ काम करना बेहद सुखद अनुभव था। हम दोनों की रुचि काफी अलग थी लेकिन भारतीय होना हमें एक सूत्र में पिरोता था। दोनों को भारतीय संगीत से बेहद लगाव था। कल्पना से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जून, 1998 में सुनीता को नासा के लिए चयनित किया गया। अगस्त, 1998 में उन्होंने नासा में प्रशिक्षण प्रारंभ कर दिया। कड़े प्रशिक्षण के बाद सुनीता खुद अंतरिक्ष यात्रा के लिए तैयार हो गई, सुनीता बताती है कि अंतरिक्ष स्पेश स्टेशन में जिन्दगी आसान नहीं है। खाने से लेकर नहाने तक यहाँ सब कुछ कठिन है। लौटने में मुश्किल होती है, आरंभ में चलने फिरने में दिक्कत होती है, हड्डियाँ कमजोर हो जाती हैं। दिमाग तैयार होने में समय लगता है। सुनीता ने खुद को अंतरिक्ष प्रशिक्षण लेकर तैयार किया। वैज्ञानिक तकनीकि भरे व्याख्यान, रूस में रहकर अंतरिक्ष कार्यक्रम तथा उनके यान आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की। उनके गोताखोरी में अनुभव होनेवाले भारहीनता से स्पेसवॉक प्रशिक्षण में सहायता प्रदान की। अंतरिक्षयात्रा के संदर्भ में बहुत-सी वैज्ञानिक जानकारियाँ और मुश्किलों के बारे में जाना। वे अंतरिक्ष के संभवित खतरों से खेलने के लिए पूर्णत: तैयार हो चुकी थीं। सुनीता पूरी तैयारी के लिए नौ दिन पानी के अन्दर भी रहीं। प्रशिक्षण खत्म होने में करीब आठ साल लगे।

डिस्कवरी अभियान फ्लोरिडा से केनेडी स्पेस सेंटर से फ्लाइट इंजीनियर के तौर पर डिस्कवरी मिशन में शामिल होने के बाद 10 दिसम्बर, 2007 अटलांटिस अंतरिक्ष यान से सुनीता स्पेस स्टेशन पहुँची। 17 दिसम्बर को अंतरिक्ष में चहलकदमी की। पृथ्वी से 360 किलोमीटर की दूरी पर कक्षा में स्थित अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की गति प्रति घंटे 27744 किलोमीटर थी। यह अड्डा प्रतिदिन पृथ्वी के 15.7 चक्कर काटता था। अर्थात् सुनीता ने पृथ्वी के 2967 चक्कर अपने अंतरिक्ष प्रवास में लगाए। इस अभियान में सुनीता ने 29 घंटे 17 मिनट तक स्पेसवॉक करके अंतरिक्ष में रिकॉर्ड बनाया। इससे पहले अप्रैल माह में 04 घंटे 24 मिनट में मैराथन जीतनेवाली पहली अंतरिक्षयात्री बन चुकी है। अंतरिक्ष के बोस्टन मैराथन में साढ़े चार घंटे में 42 किलोमीटर का सफर काटनेवाली प्रथम अंतरिक्षयात्री हुई सुनीता ने अंतरिक्ष में 188 दिन और चार घंटे के शैनोन ल्यूसिक का रिकॉर्ड तोड़ा।

सुनीता विलियम्स का छ: महीने तक रहने का अनुभव है कि वहाँ व्यायाम करना बहुत आवश्यक है। ताकि मांसपेशियों और हड्डियों की शक्ति बनाए रखी जा सके। शरीर को लचीला बनाये रखा जाये। जैसा कि साइकिल चलाना, दौड़ना, हवा में तैरना आदि। अंतरिक्षयात्रा में सोना मुश्किल, रोज डिब्बाबन्द भोजन, भारहीनता, शरीर के लचीलेपन तीव्र गति से खत्म होना, मांसपेशियाँ और हड्डियों को तेज क्षति जैसी समस्याएँ थीं।

सुनीता ने आंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केन्द्र में छह महीने प्रवास के दौरान कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए, जैसे ह्युमन लाइफ साइंस, फिजिकल साइंस, पृथ्वी का निरीक्षण, शिक्षा और टेक्नोलॉजी डेमोस्ट्रेशन जैसे विषयों पर काम किया। इसके अलावा सुनीता ने इस दौरान जमा किए गए ब्लड सैंपल, न्यूट्रिशन से सम्बन्धित अनुसंधान कर रहे वैज्ञानिकों तक पहुँचाए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सुनीता ने कहा, ''यहाँ पर सबसे बड़ी बात मुझे यह लगती है कि हमारी पृथ्वी कितनी शानदार है। दुनिया को अलग नजरिए से देखने का मौका और यह अंतर्दृष्टि मिलती है कि अपने ग्रह को कैसे आनेवाली पीढ़ियों के लिए बचायें। अंतरिक्ष मिल-जुलकर काम करने की बढ़िया जगह है और यहाँ आकर ऐसा लगता है कि हम पृथ्वी पर क्यों विवादों में उलझे रहते हैं?''

नई दिल्ली के अमरीकी सेन्टर में अंतरिक्ष यान जब भारत पर से गुजरा तब वीडियो कोन्फ्रेसिंग के दौरान सवालों के जवाब देती सुनीता ने कहा कि - ''यहाँ से विश्व सीमाओं में बटा नजर नहीं आता। यहाँ से सिर्फ दिखता है हमारा सुन्दर ग्रह, सुन्दर ग्रामीण इलाके, सुन्दर पहाड़ और आसमानी रंग के सुन्दर महासागर, हरे मैदान और अनेक रंगों में ज़मीन दिखाई दे रही थी। यह दृश्य बहुत मनोहर था।''

19 जून, 2007 को स्पेस सटल अटलांटिस सुनीता समेत सात अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर धरती की ओर रवाना हुआ। पूरा विश्व सुनीता की सकुशल वापसी के लिए प्रार्थना कर रहा था। 194 दिन 18 घंटे और 58 मिनट अंतरिक्ष में बिताकर रिकार्ड बनाकर सुनीता की वापसी 22 जून, 2007 को हुई। सुनीता के आश्चर्यजनक कार्य से भारतीयों और गुजरातियों का सर ऊँचा हुआ। हम कह सकते हैं कि यदि नारी को सर्वोच्च स्थान पर बिठाना है तो सुनीता की तरह साहसी और महत्त्वाकांक्षी बनना होगा।

शब्दार्थ

शान गौरव **परीक्षण** जाँचना **अंतरिक्ष** अवकाश, आकाश **बुलन्दी** ऊँचाई **दिवास्वप्न** दिन में दिखाई देनेवाला स्वप्न **मेसाचूसट्ेस** अमरीका का एक राज्य **न्यूरोसर्जन** मस्तिष्क की सर्जरी करनेवाला चिकित्सक **स्नातक** कक्षा 12वीं के बाद तीन साल का पूर्ण अभ्यास **परास्नातक** स्नातक के बाद दो साल का पारंगत कक्षा का अध्ययन **चहेती** प्यारी, लाडली **एम.एस.** मास्टर ऑफ सर्जरी, शल्य चिकित्सा में पारंगत **प्रशिक्षण** तालीम **चयन** पसंद **दिक्कत** मुश्किल, तकलीफ

मुहावरे

परंपराओं की बेड़ी तोड़ना पुरानी परम्पराओं को छोड़कर नयी परम्परा स्थापित करना **अस्तित्व को साकार रूप देना** व्यक्तित्व निखारना **यादें ताजा होना** बातें याद आना **एक सूत्र में पिरोना** सबको साथ में रखना **खतरों से खेलना** भयावह चीजों से पाला पड़ना **सर ऊँचा होना** गर्व होना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास

1. प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए :

(1) सुनीता को पूरे विश्व की बेटी क्यों कहा गया है ?

(2) 'महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में देश का नाम रोशन कर सकी हैं, आपका क्या मत है ?'

(3) 'कड़ी मेहनत, दृढ़ निश्चय और प्रतिभा के बल पर व्यक्ति अपनी मंजिल पा सकता है।' चर्चा कीजिए।

(4) आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं ? क्यों ?

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) सुनीता कितने समय तक अंतरिक्ष में रहकर लौटी?

(2) सुनीता ने अंतरिक्ष में कितने प्रकार का रिकॉर्ड बनाया ?

(3) अंतरिक्ष परी सुनीता विलियम्स के अलावा हमारे देश के अंतरिक्षयात्री कौन-कौन हैं ?

(4) हमें किस बात का गर्व है ?

(5) सुनीता ने अपने सपने कैसे साकार किए ?

(6) अंतरिक्ष यात्रा में किस प्रकार की मुश्किलें आती हैं ?

2. अंदाज अपना-अपना...

(1) अहमदाबाद हवाई अड्डे पर उत्तेजना थी...

(2) हमें नारी का सम्मान करना चाहिए...

(3) सुनीता पंड्या सुनीता विलियम्स बनी...

(4) कल्पना चावला हमारी कल्पना बन गई...

3. पात्रों का परिचय दीजिए :

	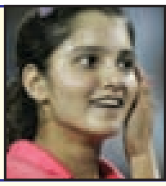	
इंदिरा गांधी	सानिया मिर्जा	किरण बेदी
मल्लिका साराभाई	कल्पना चावला	पी. टी. ऊषा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. चित्र के आधार पर काव्य लिखिए :

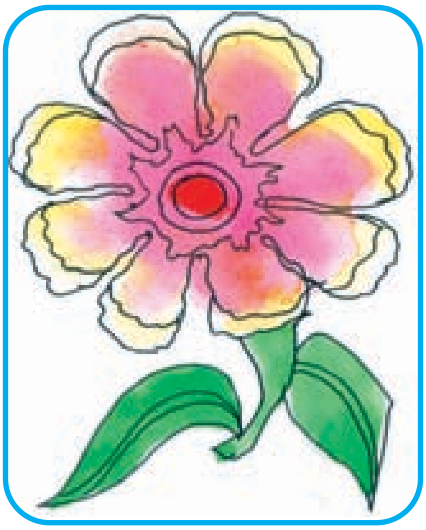

5. परिच्छेद का शुद्ध रूप से अनुलेखन कीजिए :

कुछ नया करने की लगन और उत्साह हो तो लक्ष्य तक पहुँचने से कोई रोक नहीं सकता। बचपन से ही सितारों की सैर का सपना देखनेवाली कल्पना अंतरिक्ष यात्रा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के बाद चाँद पर उतरना चाहती थी। बचपन से ही उसके मन में अंतरिक्ष यात्री बनने की धुन सवार थी। एक बातचीत में कल्पना ने कहा था, ''मैं बचपन से जिस क्षेत्र में जाना चाहती थी, वहाँ पहुँचने के लिए मैंने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया।''

भाषा-सज्जता

लिंग-परिवर्तन

☞ निम्नलिखित शब्द पढ़िए और समझिए :

➔ देवर – देवरानी, सेठ – सेठानी, रुद्र – रुद्राणी,
जेठ – जेठानी, नौकर – नौकरानी, इन्द्र – इन्द्राणी

इस प्रकार 'अकारांत' पुल्लिंग शब्द के अंत में 'आनी/आणी' लगाने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ भाग्यवान – भाग्यवती, रूपवान – रूपवती
बलवान – बलवती, पुत्रवान – पुत्रवती

इस प्रकार पुल्लिंग शब्द के अंत में 'वान' का 'वती' करने से स्त्रीलिंग रूप बनता है।

➔ बुद्धिमान – बुद्धिमती, श्रीमान् – श्रीमती

इस प्रकार शब्द के अंत में 'मान' का 'मती' करने से स्त्रीलिंग रूप बनता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

→ नेता – नेत्री, अभिनेता – अभिनेत्री

कर्ता – कर्त्री, विधाता – विधात्री

इस प्रकार पुल्लिंग शब्द के अंत में 'ता' का 'त्री' करने से स्त्रीलिंग बनता है।

→ रोगी – रोगिणी, स्वामी – स्वामिनी

वाहन – वाहिनी, सौभाग्यशाली – सौभाग्यशालिनी

इस प्रकार पुल्लिंग शब्द के अंत में 'नी' जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है। 'नी' प्रत्यय लगाने से पहले मूल शब्द को 'इकारांत' में बदलना होगा।

→ फूलदान – फूलदानी, चायदान – चायदानी

इस प्रकार पुल्लिंग शब्द के अंत में 'ई' जोड़ने से स्त्रीलिंग शब्द बनते है।

→ वर – वधू, विद्वान – विदुषी सम्राट – साम्राज्ञी

पति – पत्नी, सास – ससुर साधु – साध्वी

विधुर – विधवा, ननद – ननदोई नर – नारी

ऊपर जैसे कई शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका लिंग परिवर्तन करने के लिए शब्द का पूर्ण परिवर्तन करना पड़ता है।

- **उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन कीजिए :**

साधु, कुतिया, युवक, पुत्र, पड़ोसिन, बाघ, ठाकुर, सन्यासी, सम्राट, वर

योग्यता-विस्तार

- अपनी लाइब्रेरी में से पुस्तक लेकर अन्य अंतरिक्षयात्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- तुम्हारे आसपास भी ऐसी कई महिलाएँ होंगी जिन्होंने किसी न किसी क्षेत्र में देश का नाम रोशन किया होगा। उनके बारे में पता करें और लिखें।
- लाइब्रेरी से निम्नलिखित वैज्ञानिक जैसे कि जगदीश चन्द्र बोस, अब्दुल कलाम, डॉ. सी.वी.रामन, मेडम क्युरी, साम पित्रोडा के बारे में जानकारी संकलित करके उसे छात्रों को सुनाइए और विस्तार से समझाइए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 उठो, धरा के अमर सपूतों

द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जन्म पहली दिसंबर 1916 को रोहता, आग्रा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। 29 अगस्त 1998 में उनकी मृत्यु हुई। उनके छः काव्यसंग्रह और दो खंडकाव्य, छब्बीस बाल साहित्य, तीन कहानी संग्रह तथा अन्य साहित्य भी प्रकाशित हैं। 'इतना ऊँचा उठो', 'उठो धरा के अमर सपूतो', 'कौन सिखाता है चिड़ियों को', 'चंदा मामा आ', 'पुनः नया निर्माण करो', 'माँ!', 'यह वसंत ऋतु', 'हम सब सुमन एक उपवन के' उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

प्रस्तुत काव्य में प्रकृति के तत्त्वों से प्रेरणा लेकर अपने ज्ञान का उपयोग कर देश के सपूतों को नवनिर्माण करने का संदेश दिया है।

उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से नवस्फूर्ति, नव प्राण भरो॥
नयी प्रातः है, नयी बात है,
नयी किरण है, ज्योति नयी।
नयी उमंगें, नयी तरंगें,
नयी आस है, साँस नयी॥
युग-युग के मुरझे सुमनों में नयी-नयी मुस्कान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो॥
डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ,
नये स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे,
मस्त उधर मँडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा में नया राग, नव गान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो॥
कली-कली खिल रही इधर;
वह फूल-फूल मुस्काया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धरती माँ की आज हो रही,
नयी सुनहरी काया है।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से, गुंजित जग-उद्यान करो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुन: नया निर्माण करो॥
सरस्वती का पावन मंदिर,
शुभ सम्पत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका,
रक्षक और पुजारी है।
शत-शत दीपक जला ज्ञान के, नवयुग का आह्वान करो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुन: नया निर्माण करो॥

शब्दार्थ

निर्माण बनाना **गुंजित** भौंरों के गुंजार से युक्त **प्राय:** अक्सर **उद्यान** बाग **पुन:** फिर दोबारा **आह्वान** ललकार, चुनौती **स्फूर्ति** उत्साह

अभ्यास

1. आशय स्पष्ट कीजिए :

''युग-युग के मुरझे सुमनों में
नयी-नयी मुस्कान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतों,
पुन: नया निर्माण करो॥''

2. कवि ने देश के सपूतों को क्या संदेश दिया है ?

3. हमारी राष्ट्रीय संपत्ति कौन-कौन सी है ? उसकी सुरक्षा के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कवि माहेश्वरीजी धरा के अमर सपूतों से क्या चाहते हैं ?

(2) कवि नई मुस्कान कहाँ देखना चाहते हैं ?

(3) देश के नवनिर्माण के लिए आप क्या-क्या करना चाहेंगे?

(4) इस कविता में कौन-सी बातें हैं, जिन्हें तुम अपने जीवन में उतारना चाहोगे ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. दिए गए काव्य को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खड़ा हिमालय बता रहा है, डरो न आँधी पानी में,
डटे रहो तुम अपने पथ पर, कठिनाई-तूफानों में।
डिगो न अपने पथ से तुम, तो सबकुछ पा सकते हो प्यारे,
तुम भी ऊँचे उड़ सकते हो, छू सकते हो नभ के तारे।
अटल रहा जो अपने पथ पर, लाख मुसीबत आने में,
मिली सफलता उसको जग में, जीने में मर जाने में।
जितनी भी बाधाएँ आईं, उन सब से ही लड़ा हिमालय,
इसीलिए तो दुनिया भर में, हुआ सभी से बड़ा हिमालय।

प्रश्न :

(1) हिमालय हमें क्या संदेश देता है ?
(2) मुसीबत आने पर हमें क्या करना चाहिए ?
(3) कवि ने हिमालय को सबसे बड़ा क्यों कहा है ?
(4) इस काव्य का भावार्थ लिखिए।
(5) इस काव्य को योग्य शीर्षक दीजिए।

3. चित्र के आधार पर कविता लिखिए, जिसमें निम्नलिखित शब्दों का उपयोग हुआ हो :

(फूल, तितली, बादल, वृक्ष, बारिश)

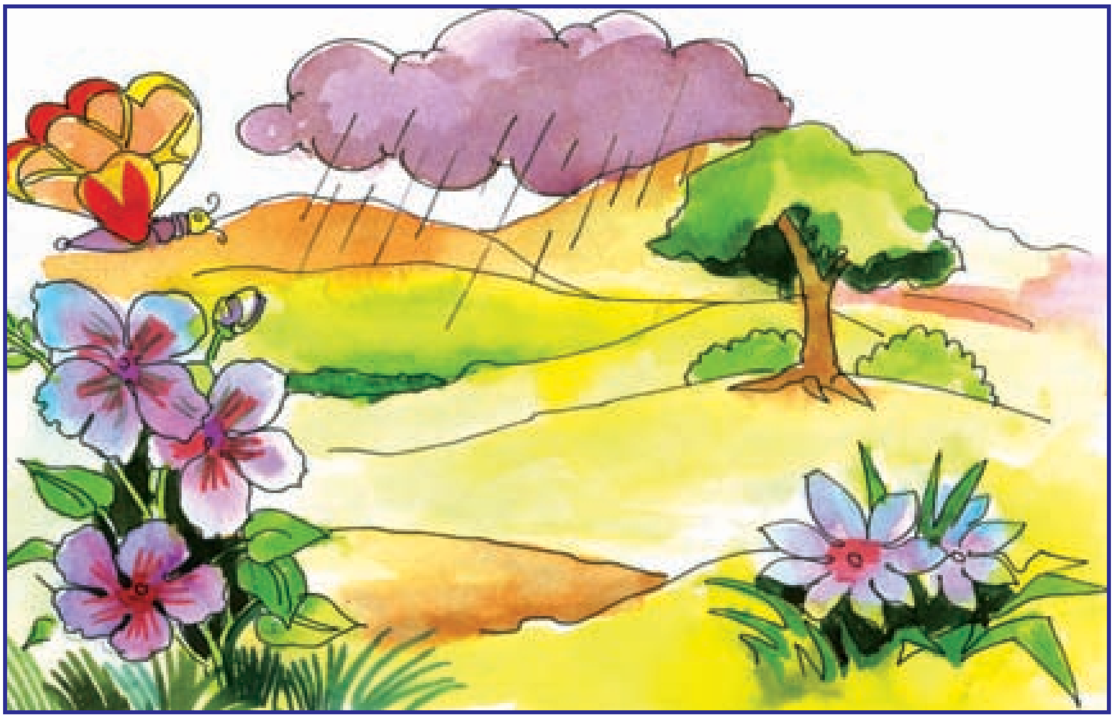

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. अपूर्ण काव्य को पूर्ण कीजिए :

माँ खादी की चद्दर दे दो,
मैं गाँधी बन जाऊँगा.....

____

____

____

____

____

____

____

भाषा-सज्जता

संज्ञा का प्रयोग

आप 'संज्ञा' के बारे में सीख चुके हैं।

→ **निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा ढूँढ़कर उसका भेद बताइए।**

- सोना कीमती धातु है।
- गंगा पवित्र नदी है।
- उमंग दौड़ रहा है।
- दल जा रहा है।
- राजेश भय के कारण जंगल में नहीं गया।

→ **निम्नलिखित विधान पढ़िए और समझिए :**

- जयेश ने कीर्ति को साड़ी दी।
- जयेश ने कीर्ति को साड़ियाँ दीं।
- बगीचे में एक लड़का है।
- बगीचे में कई लड़के हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से पता चलता है कि पहले वाक्य में 'साड़ी' से 'साड़ियाँ' और दूसरे में 'लड़का' से 'लड़के' हो गया है। यानी एकवचन का बहुवचन हुआ है। अब आप इसी तरह निम्नलिखित एकवचन वाक्य को बहुवचन में परिवर्तित कीजिए :

(1) मुझे लुटेरे का डर था।

(2) पक्षी ने उड़ान भरी।

(3) उसने मुझे मिठाई दी।

→ **निम्नलिखित वाक्य पढ़िए और वाक्य में गाढ़े काले शब्द को समझिए :**

भाववाचक संज्ञा के रूप में	**जातिवाचक संज्ञा के रूप में**
(1) बच्चे **प्रार्थना** करते हैं।	बच्चों की **प्रार्थनाएँ** बेकार नहीं जातीं।
(2) नदी की **चौड़ाई** अधिक है।	भारत में नदियों की **चौड़ाइयाँ** अधिक हैं।

उपर्युक्त वाक्य पढ़ने से पता चलता है कि पहले वाक्य में गाढ़ा शब्द प्रार्थना था जो भाववाचक रूप में था, उनके साथ दिए वाक्य में प्रार्थना को 'एँ' प्रत्यय लगाने से 'प्रार्थनाएँ' संज्ञा जातिवाचक संज्ञा बन गई।

इतना जानिए

भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग सदैव एकवचन में किया जाता है। बहुवचन में प्रयुक्त किए जाने पर ये जातिवाचक संज्ञाओं का रूप ले लेती हैं।

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित भाववाचक संज्ञाओं को जातिवाचक संज्ञा में परिवर्तित करके वाक्य फिर से लिखिए :

(1) विज्ञान ने **दूरी** को कम किया है।

(2) नदी की **लम्बाई** अधिक है।

योग्यता-विस्तार

- **छात्र के लिए**

  शिक्षक की मदद से प्रकृति के तत्त्वों पर आधारित काव्यों का संकलन कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5 सवाल बालमन के, जवाब डॉ. कलाम के

प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत यह साक्षात्कार डॉ. अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम से बच्चों की बातचीत पर आधारित है। यह बातचीत तब संपन्न हुई थी जब डॉ. कलाम राष्ट्रपति पद पर आसीन थे। वे बच्चों की जिज्ञासाओं का तुरंत उत्तर देने के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

प्रश्नकर्ता : आर. अरविंद, कक्षा : तीन, सेंट मेड्स स्कूल, चेन्नई।

क्या आप अपने बचपन की कोई यादगार घटना हमें सुना सकते हैं?

डॉ. कलाम : कक्षा पाँचवीं के मेरे शिक्षक श्री शिवसुब्रह्मण्य अय्यर की एक बात मुझे याद है। एक दिन कक्षा में वे हमें यह बता रहे थे कि कोई पक्षी कैसे उड़ता है। उन्होंने हमें रामेश्वरम के समुद्र तट पर ले जाकर इसका जीवंत उदाहरण दिया। वह ऐसी यादगार घटना थी, जो मेरे मन-मस्तिष्क में हमेशा के लिए बैठ गई। इसी से मुझे आगे विज्ञान पढ़ने की प्रेरणा मिली।

प्रश्नकर्ता : सरयू मकर, कक्षा : पाँच, वाल्मीकि नगर हिंदी माध्यमिक शाला, नागपुर

बचपन में हमें किस भाषा को प्रमुखता देनी चाहिए ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

डॉ. कलाम : मैंने स्वयं माध्यमिक शिक्षा तक की पढ़ाई अपनी मातृभाषा के माध्यम से पूरी की है। कॉलेज और उससे आगे की शिक्षा अंग्रेज़ी माध्यम की संस्थाओं में हुई। मेरा मानना है कि हम कॉलेज में भी माध्यम के रूप में मातृभाषा का चुनाव कर सकते हैं। क्योंकि युवा अपनी मातृभाषा में ही सोचता है। उसी में अपनी बात सहजता से कहने में सक्षम होता है। पर इसमें कोई भी दो राय नहीं कि वैश्विक स्तर पर संपर्क के लिए हमें अंग्रेजी जैसी एक संपर्क भाषा की नितांत आवश्यकता है।

प्रश्नकर्ता : अर्श पटेल, कक्षा : पाँच, चंदुलाल विद्यामंदिर, मुंबई।

यदि हम आपकी तरह बनना चाहें तो हमें क्या करना चाहिए ?

डॉ. कलाम : जब आप युवा अवस्था में कदम रखें तभी आपको जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर लेना होगा। हमेशा कुछ बड़ा सोचो। जैसे ही यह अनुभूति हो कि आप आखिर बनना क्या चाहते हैं, तभी से उस दिशा में प्रयास और श्रम प्रारंभ कर दो। कहने का अर्थ है कि जी-तोड़ मेहनत करो। ज्यों-ज्यों आप आगे की ओर बढ़ोगे, आपका सामना बाधाओं तथा कठिनाइयों से होगा। आपको अपने अंदर दृढ़ साहस पैदा करना होगा। समस्याओं को पराजित करने में महारत हासिल करनी होगी। तभी जीवन में सफल हो पाओगे। पहले यह ज़रूरी है कि आप निरंतर ज्ञान अर्जित करो।

प्रश्नकर्ता : चिराग जैन, कक्षा : सात, बांबे कैंब्रिज, अंधेरी (पश्चिम), मुंबई।

वह कौन-सी बड़ी चुनौती है, जिसका सामना हमें आज करना पड़ रहा है ?

डॉ. कलाम : भारत को सन् 2020 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करना और देश के एक अरब से अधिक नागरिकों के चेहरों पर मुसकान देखना। यही राष्ट्र के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है।

प्रश्नकर्ता : हर्ष चांडक, कक्षा : सात, डॉ. एस. राधाकृष्णन विद्यालय, मलाड, मुंबई।

आपकी दृष्टि में साहस की परिभाषा क्या है ?

डॉ. कलाम : अपनी जान की परवाह किए बिना दूसरों को संकट या आपदा से बचाना ही साहस है।

प्रश्नकर्ता : तरुण पटेल, कक्षा : आठ, स्वामीनारायण इंडिपेंडेंट स्कूल, लंदन।

हम प्रवासी भारतीय मातृभूमि के प्रति गर्व की भावना कैसे विकसित करें ?

डॉ. कलाम : भारतीय मूल का कोई भी व्यक्ति एक बृहद् भारतीय परिवार का अंग है और उसे हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत पर गर्व है। सौभाग्य से आप लोग ऐसी स्थिति में हैं कि अपनी मातृभूमि से अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं और यही आपके लिए गौरव की बात है।

प्रश्नकर्ता : सत्यम, कक्षा : दस, ज़िला स्कूल, मुंगेर।

जो भी बच्चे आपसे मिलते हैं, वे कहते हैं कि वे एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर आदि बनना चाहते हैं पर किसान, मज़दूर और कलाकार भी किसी राष्ट्र के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं। हम ऐसे ही परिवारों से आते हैं। हमारे लिए आपका क्या संदेश है ?

डॉ. कलाम : किसान, मज़दूर, कलाकार और दस्तकार-ये सभी हमारे राष्ट्र के अभिन्न अंग हैं। राष्ट्र निर्माण में हमें उन सभी की सेवाओं की समान रूप से दरकार है। आप सभी को चाहिए कि अपने-अपने क्षेत्रों में खूब उन्नति करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्नकर्ता : रोहित चतुर्वेदी, कक्षा : 11, इस्लामिया इंटर कॉलेज, इटावा।

आप कहते हैं कि भारत 2020 तक विकसित राष्ट्र बन जाएगा पर निरंतर बढ़ती जनसंख्या और बेरोजगारी इसे संभव होने देगी ?

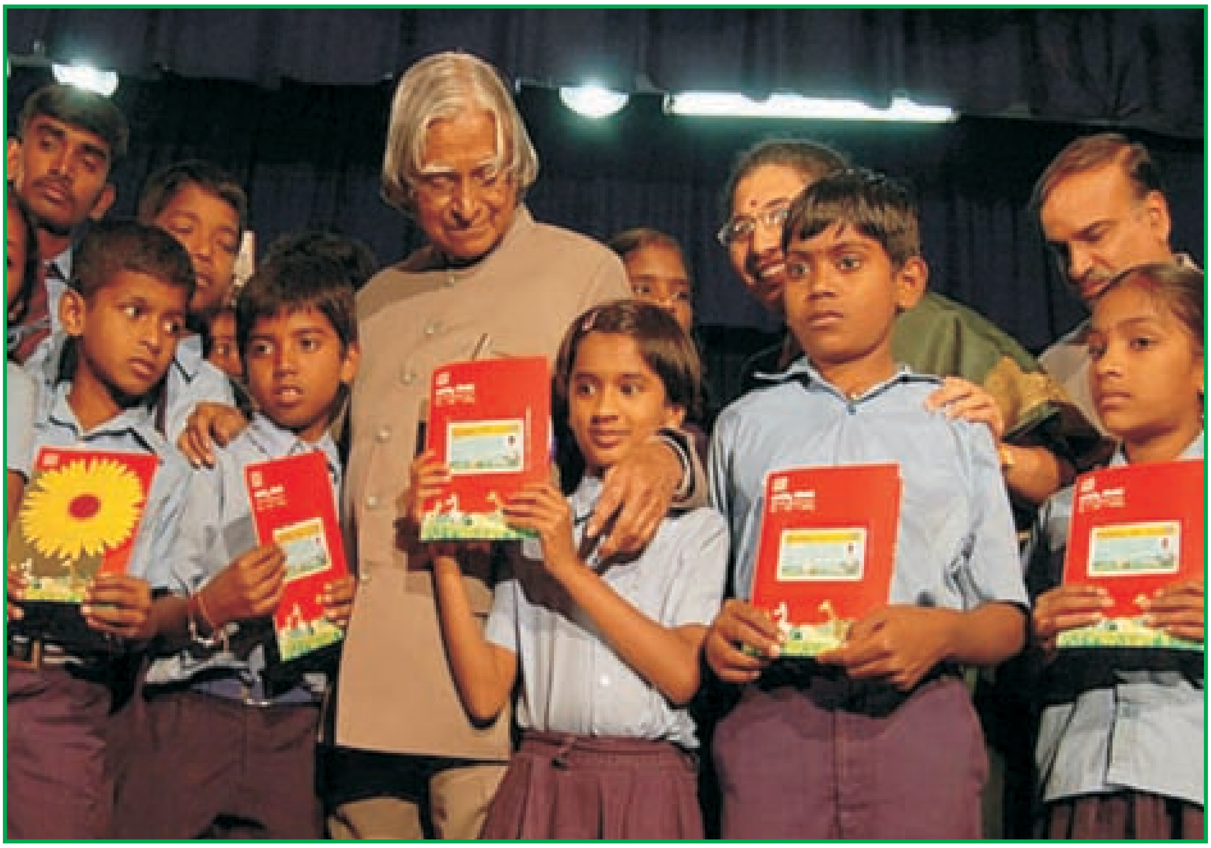

डॉ. कलाम : विकास स्वयं जनसंख्या वृद्धि को रोकने की अचूक औषधि है। इसमें जनशिक्षा विशेषकर स्त्री-शिक्षा की बात भी सम्मिलित है। इससे 'छोटा परिवार-सुखी परिवार' की मान्यता को बल मिलता है। भारत 2020 का मिशन यहाँ के युवाओं को रोज़गार के पर्याप्त अवसर सुलभ कराएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में उद्योग-धंधे स्थापित किए जाएँगे, जिससे उन क्षेत्रों में रोज़गार के प्रचुर अवसर पैदा होंगे।

प्रश्नकर्ता : अर्श मेहता, कक्षा : 12, तेजस हाईस्कूल, बड़ौदा।

आपको ऐसा क्यों लगता है कि 2020 तक भारत विकसित राष्ट्र बन जाएगा ?

डॉ. कलाम : भारत की जनसंख्या एक अरब से अधिक है। इसमें 54 करोड़ लोग 25 वर्ष से कम आयु के हैं। ये हमारी राष्ट्रीय शक्ति हैं। भारत को 2020 तक विकसित राष्ट्र में परिवर्तित करने के लिए हमारे पास प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों के साथ ही सुनियोजित खाका भी उपलब्ध है। 54 करोड़ युवाओं के विचारों की एकता निश्चय ही इसे विकसित राष्ट्र में परिवर्तित करने में सफल होगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्नकर्ता : एस. कार्तिक, कक्षा : 12 अमर ज्योति इंग्लिश स्कूल, बंगलूरु।

कई छात्रों के बड़े-बड़े लक्ष्य होते हैं पर आर्थिक तथा अन्य समस्याओं के कारण वे इन्हें प्राप्त नहीं कर पाते। वे अपना लक्ष्य आखिर कैसे प्राप्त करें ?

डॉ. कलाम : स्कूल में पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करने पर छात्रवृत्ति प्राप्त होगी। साथ ही उच्च शिक्षा के लिए बैंकों से ऋण लेने हेतु पात्रता भी बनेगी। जीवन में ऊँचा लक्ष्य निर्धारित करने पर बाधाएँ तो आती ही हैं। हमें कठोर परिश्रम और उत्कृष्ट कार्यों से इन्हें पराजित करना होगा। विघ्न-बाधाओं से व्यक्ति को पराजित नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मिथुन के. द्वितीय वर्ष (बी लेवल) ए.आई.सी.टी. अमृतापुरी।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में राजनीतिज्ञ की क्या भूमिका होनी चाहिए ?

डॉ. कलाम : ज़िम्मेदार राजनीतिज्ञ दूरदर्शितापूर्ण नीतियाँ बनाता है। महात्मा गांधी ने निष्ठा के राजनीतिक सिद्धांत को सत्य, अहिंसा तथा नि:स्वार्थ भावना में ढालते हुए ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध अपनी लड़ाई छेड़ी थी। वर्तमान राजनीतिज्ञों को अपने कठिन परिश्रम, उत्कृष्टता और पारदर्शी कार्यों से मार्गदर्शन देना होगा। साथ ही गरीबी-रेखा से नीचे रह रहे लगभग 26 करोड़ भारतीयों के उत्थान के लिए भी कार्य करना होगा।

प्रश्नकर्ता : सी. नंदिता सूबी, तृतीय वर्ष, एम.जी.आर. इंस्टीट्यूट, चेन्नई।

रक्षा की दृष्टि से विजन 2020 का लक्ष्य पाने में महिलाओं की क्या भूमिका हो सकती है ?

डॉ. कलाम : विज़न 2020 में रक्षा अनुप्रयोग के क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के विकास पर विचार किया गया है। राष्ट्रीय सुरक्षा की बात भी विज़न 2020 का एक अभिन्न अंग है। सशस्त्र सेनाओं में नियुक्ति के लिए पुरुष और महिला के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता। तीनों सेनाओं में पर्याप्त महिला अधिकारी नियुक्त हैं। राष्ट्रीय रक्षा क्षमताओं में वृद्धि के लिए महिलाएँ उच्च स्तरीय सामरिक सेना बहुगुणक उपकरणों पर कार्य करके भी अपना सहयोग दे सकती हैं।

प्रश्नकर्ता : जोधपुर दौरे पर डॉ. कलाम से एक बच्चे द्वारा पूछा गया प्रश्न।

क्या हम अतिविशिष्ट व्यक्तियों के दौरे पर हो रहे अनावश्यक खर्चे कम नहीं कर सकते ?

डॉ. कलाम : तुमने इस मंच पर एक बड़ी-सी कुरसी देखी होगी। वह कुरसी अब यहाँ पर नहीं है। ठीक ऐसे ही अनुत्पादक चीज़ों पर हो रहे अनावश्यक खर्च भविष्य में नहीं होंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

जीवंत जीवित, जीता-जागता **मातृभाषा** माँ/परिवार की भाषा **वैश्विक** विश्व संबंधी **बृहद्** बड़ा, महान, भारी **विरासत** धरोहर **दस्तकार** शिल्पकार **दरकार** जरूरत **उत्कृष्ट** उत्तम, श्रेष्ठ **विघ्न** बाधा, अड़चन **पारदर्शी** जिसके आर-पार देखा जा सके **बहुगुणक** बहुत अधिक (संख्या में) **निष्ठा** श्रद्धा, विश्वास **अनुत्पादक** जो उत्पन्न न करे **अतिविशिष्ट** बहुत महत्त्वपूर्ण **सामरिक** समर या युद्ध से सम्बन्ध रखनेवाला **खाका** ढाँचा, नकशा, मसौदा, आलेख **प्रचुर** पर्याप्त

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) यदि आप इन प्रश्नकर्ताओं में होते तो आप कौन-कौन से प्रश्न पूछते ?

(2) डॉ. कलाम ने अपने बचपन की कौन-सी यादगार घटना सुनाई ?

(3) आपकी यादगार घटना बताइए।

(4) अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आप क्या-क्या करते हैं ?

(5) किसी को मुसीबत में देखकर आप क्या करते हैं ?

2. परिच्छेद को शुद्ध रूप से पढ़िए और सुंदर अक्षरों में लिखिए :

व्यायाम करते समय कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए। प्रात:काल शौचादि से निवृत्त होकर, खाली पेट व्यायाम करना चाहिए। व्यायाम के समय शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग प्रभावित होने चाहिए; अन्यथा अंगों की सुड़ौलता एवं शक्ति में असंतुलन आ जाता है। श्वास लेने और छोड़ने की प्रक्रिया व्यायाम के अनुसार ध्यानपूर्वक करनी चाहिए किन्तु यदि श्वास फूलने लगे तो तत्काल व्यायाम बन्द कर देना चाहिए। व्यायाम में नियमितता का होना अत्यंत आवश्यक है।

3. बचपन में हमें किस भाषा को प्रमुखता देनी चाहिए? मातृभाषा या अंग्रेजी? क्यों ?

4. अनुमान लगाओ तुम 2020 में हो। अपने आस-पास क्या देख रहे हो? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) पढ़े हुए से देखा हुआ ज्यादा याद रह जाता है ? क्यों ?

(2) भाषा के विषय में डॉ. कलाम ने क्या बताया ?

(3) चिराग जैन ने डॉ. कलाम से क्या पूछा?

(4) राष्ट्र विकास में महिलाओं का क्या योगदान है ?

(5) किसी भी देश के लिए सेना का क्या महत्त्व है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

जी तोड़ मेहनत करना, महारत हासिल करना

3. रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए :

एक ब्राह्मण स्त्री – नेवला पालना – पानी भरने को बाहर जाना – लौटने पर नेवले का मुँह खून से भरा देखना – बच्चे की हत्या की शंका – नेवले पर घड़ा पटकना – बच्चे को जिन्दा पाना – पास ही मरा हुआ साँप पाना – पछतावा – सीख।

4. मातृभाषा में अनुवाद कीजिए :

हमारे लिए संसार में सबसे अधिक मूल्यवान हमारा शरीर है। शरीर के द्वारा ही हम सभी काम करते हैं। इसलिए शरीर का स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करना आवश्यक है। व्यायाम से शरीर मजबूत और सुड़ौल बनता है। अंग-अंग में स्फूर्ति आती है। शरीर में आलस्य नहीं रहता।

भाषा-सज्जता

- **सर्वनाम :** आप सर्वनाम एवम् उसके प्रकार पढ़ चुके हैं। अब निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्द छाँटिएँ तथा उनके प्रकार भी बताइए।

(1) हम पाठशाला जाएँगे।

(2) यह मेरी किताब है।

(3) कोई आ रहा है।

(4) तुम्हें क्या चाहिए ?

(5) यह मीना है जिसने कल गीत गाया था।

(6) मैं स्वयं चला जाऊँगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

➔ **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से पढ़िए :**

एकवचन	**बहुवचन**
(1) मैं कल गाँव जाऊँगा।	हम कल गाँव जाएँगे।
(2) मेरी किताब कहाँ है ?	हमारी किताबें कहाँ हैं ?
(3) उसे कल बुखार था।	उन्हें कल बुखार था।
(4) यह कौन है ?	ये कौन हैं ?
(5) तुझे क्या चाहिए ?	तुम्हें क्या चाहिए ?

उपर्युक्त रेखांकित शब्द – मैं,मेरी, उसे, यह, तुझे सर्वनाम के एकवचन रूप हैं जबकि हम, हमारी, उन्हें, ये और तुम्हें उनके बहुवचन रूप हैं। कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम शब्दों के उचित रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) यह कार्य ________ नहीं हो सकेगा । (मैं)

(2) पापा ने ________ बुलाया है। (तुम)

(3) जो लड़की वहाँ खड़ी है, मैं ________ नहीं जानता। (वह)

(4) लगता है ________ मेरी बात अच्छी नहीं लगती। (यह)

(5) यह काम ________ लोगों ने किया ? (कौन)

योग्यता-विस्तार

- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित 'अदम्य साहस', 'अग्नि की उड़ान', 'भारत-2020 नवनिर्माण की रूपरेखा', 'हम होंगे कामयाब' आदि पुस्तकें पढ़िए।
- एक छात्र के रूप में राष्ट्र के विकास में आप क्या योगदान कर सकते हैं, इस पर चर्चा कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6 भरत

राजा लक्ष्मण सिंह

1926 में आगरा में जन्मे राजा लक्ष्मण सिंह हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, बंगला और अरबी भाषा भली भाँति जानते थे। इनकी अनेक पुस्तकों का अंग्रेजी और हिन्दी में अनुवाद हुआ है। कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम', 'मेघदूत' और 'रघुवंश' के हिन्दी अनुवाद पर इन्हें पुरस्कार दिया गया।

कालिदास द्वारा लिखित मूल नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का हिन्दी में अनुवाद राजा लक्ष्मण सिंह ने किया था। प्रस्तुत पाठ उसी नाटक का एक अंश है। ऋषि कण्व के आश्रम में शकुंतला का पुत्र भरत एक सिंह शावक के साथ खेल रहा है। आश्रम में रहनेवाली दो तपस्विनियाँ बालक को रोकने का प्रयत्न कर रही हैं। राजा दुष्यंत छुपकर इस मनोहर दृश्य का आनंद ले रहे हैं। बालक के प्रति सहज आकर्षण से वे रोमांचित हैं। उनसे रहा नहीं गया और वे बालक के पास पहुँच गए। उसे गोद में उठाकर प्यार किया। वे सोचने लगे – काश ! यह बालक मेरा पुत्र होता! दोनों तपस्विनियों की बातचीत से उन्हें पता चला कि यह बालक उन्हीं का पुत्र है। यह जानकर वे खुशी से झूम उठे।

पात्र : बालक – भरत   राजा – दुष्यंत

तपस्विनी – पहली   तपस्विनी – दूसरी

दृश्य

एक बालक सिंह के बच्चे को घसीटते हुए लाता है और दो तपस्विनियाँ उसे रोकती हुई आती हैं। राजा दुष्यंत पेड़ की ओट से उन्हें देख रहे हैं।

बालक : अरे सिंह ! तू अपना मुख खोल, मैं तेरे दाँत गिनूँगा।

पहली तपस्विनी : ए हठीले बालक! तू वन के इन पशुओं को क्यों सताता है ? हम तो इन पशुओं को बाल–बच्चों के समान रखती हैं। तेरा साहस बढ़ता ही जाता है। तेरा नाम ऋषियों ने सर्वदमन रखा है, सो ठीक ही है।

दुष्यंत : (उनकी बातें सुनकर, स्वयं से) अहा, क्या कारण है कि मेरा स्नेह इस बालक की ओर उमड़ा–सा आता है ?

दूसरी तपस्विनी : जो तू इस बच्चे को छोड़ न देगा तो, सिंहनी तुझ पर दौड़ेगी।

बालक : (मुस्कराकर) ठीक है, सिंहनी का मुझे ऐसा ही डर है ! (मुँह चिढ़ाता है।)

दुष्यंत : (आश्चर्य से) यह बालक अवश्य किसी तेजस्वी वीर का पुत्र है। इसका मुख अग्नि के समान दमक रहा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पहली तपस्विनी : हे प्यारे बालक, सिंह के बच्चे को छोड़ दे। मैं तुझे खिलौना दूँगी।

बालक : (हाथ पसारकर) पहले खिलौना दे दो। लाओ, कहाँ है ?

दुष्यंत : (दूर से बालक की हथेली को देखकर, स्वयं से) आहा! इसके हाथ में चक्रवर्तियों के लक्षण हैं। उँगलियों पर कैसा अद्भुत जाल है, और हथेली की शोभा प्रात: कमल को भी लज्जित कर रही है।

दूसरी तपस्विनी : हे सखी सुव्रता, यह बातों से न मानेगा। जा, मेरी कुटिया में ऋषिकुमार के खेलने के लिए मिट्टी का मोर रखा है, उसे ले आ।

पहली तपस्विनी : मैं अभी लिए आती हूँ। (जाती है।)

बालक : तब तक मैं इसी सिंह के बच्चे के साथ खेलूँगा। (यह कह कर तपस्विनी की ओर देखकर हँसता है।

दुष्यंत : (आप ही आप) इस सुंदर बालक से खेलने को मेरा मन कैसा ललचाता है! (आह भरकर) धन्य हैं वे मनुष्य ! जो अपने पुत्रों को गोद में लेकर उनेक अंग की धूलि से अपनी गोद मैली करते हैं और पुत्रों के मुख अकारण हँसी से खुलकर, उज्ज्वल दाँतों की शोभा दिखाते और तुतले वचन बोलते हैं।

दूसरी तपस्विनी : क्यों रे ढीठ, तू मेरी बात कान नहीं धरता ?
(इधर-उधर देखकर) कोई ऋषिकुमार यहाँ हैं ?
(दुष्यंत को देखकर) हे महात्मा! तुम्हीं आओ और कृपा करके इस बली बालक के हाथ से सिंह के बच्चे को छुड़ाओ।

दुष्यंत : अच्छा ! (बालक के पास जाकर और हँसकर) हे ऋषिकुमार, तुमने तपोवन के विरुद्ध यह आचरण क्यों सीखा है जिससे तुम्हारे कुल की लाज जाती है। यह तो कोई अच्छी बात नहीं।
(बच्चे ने सिंह के बच्चे को छोड़ दिया)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दूसरी तपस्विनी : हे बड़भागी, यह ऋषिकुमार नहीं है।

दुष्यंत : सत्य है, उसके काम ही ऐसे साहस के हैं। यह ऋषिकुमार नहीं जान पड़ता। परंतु मैंने तपोवन में वास देख इसे ऋषिपुत्र जाना था।

(बच्चे की हथेली को अपने हाथ में लेकर स्वयं से।)

अहा ! जब इसका हाथ छूने से मुझे इतना सुख हुआ है तो जिस बड़भागी का यह बेटा है, उसे कितना हर्ष होता होगा!

दूसरी तपस्विनी : (दोनों की ओर देखकर) बड़े अचंभे की बात है।

दुष्यंत : तुम्हें क्यों अचंभा हुआ?

दूसरी तपस्विनी : इसलिए हुआ कि इस बालक की और तुम्हारी सूरत बहुत मिलती है और तुम्हें जाने बिना भी इसने तुम्हारी बात मान ली!

दुष्यंत : (बच्चे को गोद में उठाकर) हे तपस्विनी, जो यह ऋषिकुमार नहीं है तो किस वंश का है?

दूसरी तपस्विनी : यह पुरुवंशी है।

दुष्यंत : (स्वयं से) इसलिए इसकी सूरत मुझसे मिलती है!

(बच्चे को गोद से उतारकर) पुरुवंशियों में यह रीति तो निश्चित है कि युवा अवस्था में वे महलों मे रहकर पृथ्वी की रक्षा और पालन करते हैं और वृद्धावस्था आने पर वन में जितेन्द्रिय तपस्वियों के आश्रम में वृक्षों के नीचे कुटी बनाकर रहते हैं। देवता जैसी शक्तिवाला यह निडर और असाधारण बालक मनुष्य का पुत्र भला किस प्रकार होगा?

दूसरी तपस्विनी : हे परदेशी, तेरा यह संदेह तब मिट जाएगा, जब तू जान लेगा कि इस बालक की माँ मेनका नामक एक अप्सरा की बेटी है। उसी के प्रताप से इसका जन्म देवपितर के इस तपोवन में हुआ।

दुष्यंत : (मन में) यह तो बड़े आनंद की बात सुनाई, इससे कुछ और आशा बढ़ी। इसकी माता किस राजर्षि की पत्नी है ?

दूसरी तपस्विनी : जिस राजा ने अपनी विवाहिता स्त्री को बिना अपराध छोड़ दिया है, उसका नाम मैं न लूँगी।

दुष्यंत : (स्वयं से) यह कथा तो मुझ पर लगती है, भला, अब इस बालक की माँ का नाम पूछूँ !

(पहल तपस्विनी मिट्टी का मोर लेकर आई।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पहली तपस्विनी : हे सर्वदमन, यह शकुंत लावण्य देख !

बालक : (बड़े चाव से देखकर) कहाँ है शकुंतला? मेरी माता।

दूसरी तपस्विनी : (हँसती हुई) यहाँ तेरी माता नहीं है। तुम इस नाम से धोखा खा गए सर्वदमन ! मैंने तो कहा था मिट्टी के मोर को देख !

दुष्यंत : (स्वयं से) इसकी माँ मेरी ही प्यारी शकुंतला है या इस नाम की कोई दूसरी स्त्री है। यह वृत्तांत मुझे ऐसे व्याकुल करता है जैसे मृगतृष्णा प्यासे हिरण को व्याकुल करती है।

बालक : (खुश होकर) मुझे यह मोर बहुत अच्छा लगता है। (खिलौना ले लेता है)

पहली तपस्विनी : (घबराकर) ओह, बालक की बाँह से रक्षाबंधन कहाँ गया?

दुष्यंत : घबराओ मत, जब यह नाहर से खेल रहा था, तब इसके हाथ से गिर गया था, सो वह पड़ा है। मैं उठाकर तुम्हें दिए देता हूँ।

(उठाने के लिए झुकता है)

पहली तपस्विनी : अरे ! अरे ! मत उठाओ। इसे मत छूना।

दूसरी तपस्विनी : ओह ! इसने तो उठा ही लिया।

(दोनों एक दूसरे को आश्चर्य से देखती हैं।)

दुष्यंत : यह लो, परंतु यह कहो कि तुमने मुझे इसको उठाने से रोका क्यों था?

दूसरी तपस्विनी : इस रक्षाबंधन का नाम 'अपराजित' है। जिस समय इस बालक का नामकरण हुआ था, तब महात्मा मरीचि के पुत्र कश्यप ने यह धागा दिया था। इसका गुण है कि कभी यह धरती पर गिर पड़े तो इस बालक के माता-पिता को छोड़कर इसे कोई दूसरा न उठा सके।

दुष्यंत : और जो कोई उठा ले तो क्या हो?

पहली तपस्विनी : तो यह तुरंत साँप बनकर उसे डसता है।

दुष्यंत : तुमने कभी ऐसा होते देखा है?

पहली तपस्विनी : अनेक बार।

दुष्यंत : (प्रसन्न होकर) तो अब मेरा मनोरथ पूरा हुआ। मैं क्यों न आनंद मनाऊँ !

(बालक को गोद में ले लेता है)

(पर्दा गिरता है।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

तपस्विनी तप करनेवाली स्त्री **अचंभा** हैरानी **हठीला** जिद्दी **सर्वदमन** सबका दमन करनेवाला, दुष्यन्त पुत्र भारत का एक नाम **उज्ज्वल** चमरका हुआ, स्वच्छ **चक्रवर्ती** सम्राट, समुद्र तक पृथ्वी को जीतने वाला **तुतले वचन** अटपटे शब्द **ढीठ** जिद्दी **आचरण** व्यवहार **बढ़भागी** बड़े भाग्यवाला **कुल** वंश **वृद्धावस्था** बुढ़ापा **जिकेन्द्रिय** जिसने अपनी इन्द्रियोंको जीत लिया हो **नोहर** शेर, सिंह **देवपितर** देव और पूर्वज **विवाहिता** शादीशुदा स्त्री **परदेशी** दूरसे देश का **शकुंत लावण्य** मिट्टी का सौन्दर्य **वृत्तांत** वर्णन, हाल **मनोरथ** मन की कामना, इच्छा **ओट** आड, अवरोध

मुहावरे

बात पर कान नहीं धरना अनसुना करना, **धोखा खा जाना** सच्ची बात को न समझ पाना, मूर्ख बनना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) इस एकांकी के आधार पर बालक सर्वदमन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(2) सर्वदमन के व्यवहारों को देखकर दुष्यन्त के मन में कौन-कौन से विचार आते थे ?

2. इस एकांकी में निम्नलिखित पात्रों में अंतर्निहित मूल्य बताइए :

(1) दुष्यंत

(2) सर्वदमन

3. इस परिच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार एक अच्छा जंगल ''जैविक भंडार घर'' होता हे। यह हजारों प्रजातियों के पौधों को उगाकर रखता है, जो बाद में चलकर बहुमूल्य हो जाते है। अगर हम जंगल को एक सीमा से भी ज्यादा छाँटते हैं या खत्म करते हैं, तो वे चीजें भी नष्ट हो जाती हैं जिनकी हमें कभी भी बहुत जरूरत हो सकती है। वह एक संभवित पौधा, खाने की औषधीय वस्तु या कोई उपयोगी चीज बनाने में इस्तेमाल होनेवाली कोई जरूरी वस्तु में से कुछ भी हो सकता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न :

(1) एक अच्छा जंगल क्या कहलाता है ?

(2) जंगल को ज्यादा छाँटने या खत्म करने से क्या नुकसान होता है ?

(3) इस परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए।

(4) पर्यायवाची लिखिए :

जंगल, घर, बहुत

(5) इस परिच्छेद–आधारित दो सवाल बनाइए।

4. सोच अपनी-अपनी...

(1) आपको कौन–सा टी.वी. प्रोग्राम अच्छा लगता है ? क्यों ? दस–पन्द्रह वाक्यों में वर्णन कीजिए।

(2) कक्षा में पढ़ाई कर रहे हों और धरतीकंप आ जाए तो आप क्या करेंगे?

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) ऋषियों ने बालक का नाम सर्वदमन क्यों रखा ?

(2) दुष्यंत बालक के प्रति क्यों आकृष्ट हो रहे थे ?

(3) दुष्यंत ने पुरुवंशीय जीवन की कौन-सी दो रीतियाँ बताई ?

2. चित्रों का अवलोकन करके अपने शब्दों में कहानी लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भाषा-सज्जता

विशेषण

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और उनमें प्रयुक्त गाढ़े शब्दों पर ध्यान दीजिए।**

(1) सूरत **एतिहासिक** नगर है।

(2) **परिश्रमी** छात्र कभी असफल नहीं रहता।

(3) हमने बाजार से **दो लीटर** दूध खरीदा।

(4) छात्रालय में **बीस** छात्र हैं।

(5) **वे** लड़के खेल रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में ऐतिहासिक, परिश्रमी, दो लीटर, बीस आदि शब्द गुण, संख्या, मात्रा, परिमाण बताते हैं। ये सभी गाढ़े शब्द किसी न किसी रूप में वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता का बोध करा रहे हैं।

> **''जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा, परिमाण) बताते हैं, वे 'विशेषण' कहलाते हैं।''**

- **आप विशेषण तथा उनके प्रकार पढ़ चुके हैं। निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण पहचानकर उनके प्रकार लिखिए :**
  - ओम चतुर लड़का है।
  - श्याम बीस किलो आटा लाया।
  - सानिया बाजार से थोड़ी चीनी लायी।
  - साहिल के पास दस रुपए हैं।
  - कुछ लड़के उद्यान में खेल रहे हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए :**

(क) सानिया अच्छी लड़की है।

(ख) सानिया कोमल से अच्छी लड़की है।

(ग) सानिया कक्षा में सबसे अच्छी लड़की है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अच्छा' विशेषण का प्रयोग तीन प्रकार से किया गया है।

(क) वाक्य में केवल सानिया की विशेषता का बोध कराने के लिए।

(ख) वाक्य में सानिया और कोमल की तुलना करके सानिया को कोमल से अच्छी बताने के लिए।

(ग) वाक्य में सानिया को कक्षा में सबसे अच्छी बताने के लिए।

- उपर्युक्त विधानों से यह स्पष्ट है कि विशेषण शब्दों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द की सामान्य विशेषता बताने के लिए।
- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषताओं की तुलना करने के लिए उनमें से एक को दूसरे से कम या ज्यादा बताने के लिए।
- दो से अधिक संज्ञा या सर्वनाम की विशेषताओं की तुलना करके उनमें से किसी एक को सबसे कम या सबसे ज्यादा बताने के लिए किया जा सकता है।

निम्नलिखित विशेषणों का तीन प्रकार से वाक्य में उपयोग कीजिए :

(1) सुंदर (2) बड़ा (3) मेहनती (4) चालाक

लिंग-परिवर्तन

☞ **निम्नलिखित शब्द पढ़िए और समझिए :**

➔

सुत – सुता	प्रिय – प्रिया	आचार्य – आचार्या
भवदीय – भवदीया	छात्र – छात्रा	शिष्य – शिष्या

इस प्रकार पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔

टोकरा – टोकरी	दास – दासी	सखा – सखी
मटका – मटकी	कटोरा – कटोरी	रस्सा – रस्सी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'ई' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ मोर – मोरनी	शेर – शेरनी	भील – भीलनी
ऊँट – ऊँटनी	मजदूर – मजदूरनी	सिंह – सिंहनी

इस प्रकार के पुल्लिग शब्दों के अंत में 'नी' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ पुजारी – पुजारिन	नाग – नागिन	पड़ोसी – पड़ोसिन
साँप – साँपिन	सुनार – सुनारिन	माली – मालिन

इस प्रकार पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'इन' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ पंडित – पंडिताइन	ठाकुर – ठकुराइन	गुरु – गुरुआइन

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'आइन' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ डिब्बा – डिबिया	बूढ़ा – बुढ़िया
बंदर – बंदरिया	कुत्ता – कुतिया

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'आ' को 'इया' करने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ नायक – नायिका	लेखक – लेखिका
गायक – गायिका	बालक – बालिका

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'अक' को 'इका' करने से स्त्रीलिंग बनता हैं।

☞ **इन उदाहरण के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिर्वतन कीजिए :**

(1) हिरन (2) शिक्षक (3) पंडित

योग्यता-विस्तार

- पुस्तकालय से पुस्तक लेकर दुष्यंत-शकुंतला की कथा पढ़िए।
- इस एकांकी का छात्रों से नाट्यीकरण करवाइए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7 सोच अपनी-अपनी

किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में तर्क–वितर्क सहित अपने विचारों की अभिव्यक्ति ही 'वाद–विवाद' है। वाद–विवाद, मौखिक भावाभिव्यक्ति का अत्यंत प्रभावशाली तथा महत्त्वपूर्ण रूप है। वाद–विवाद में कोई एक विषय निर्धारित कर लिया जाता है। कुछ विद्यार्थी उस विषय के पक्ष में तथा कुछ विपक्ष में अपने–अपने तर्क इकट्ठे करके कार्यक्रम के दिन श्रोताओं के सामने प्रस्तुत करते हैं। एक वक्ता पक्ष में अपने विचार रखता है, तो दूसरा वक्ता विपक्ष में। इस प्रकार वक्ताओं को अपनी बात की पुष्टि तथआ विपक्षी के कथन के खंडन का अवसर मिलता है।

- नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए। फिर उन पर आधारित प्रश्नों पर कक्षा में वाद–विवाद करवाइए :

(1) दोनों चित्रों में क्या अंतर है ?

(2) गाँव तथा नगर के जीवन में क्या अंतर है और तुम्हें कौन-सा रुचिकर लगता है ? क्यों ?

(3) क्या तालाब का जल पीने के लिए योग्य है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

- **नीचे दिए हुए मुद्दों के आधार पर ''विज्ञान वरदान या अभिशाप'' इस विषय के एक पक्ष पर अपने विचार कारण सहित प्रस्तुत कीजिए।**

(प्रदूषण, बिजली, अंतरिक्ष की खोज, डॉक्टरी सुविधा, दूरभाष, कम्प्यूटर, परमाणु, बम, पिस्तौल, यातायात, ग्लोबल वॉर्मिंग)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- कौन शक्तिशाली है 'कलम या तलवार', अपने विचार कारण सहित बताइए।
- दी गई सामग्री पढ़िए और उसके आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बहुत दूर जन्म ले रहा है धरती जैसा ग्रह

नासा की दूरबीन ने दिखाई पृथ्वी के जन्म जैसी तस्वीरें, 424 प्रकाश वर्ष दूर है नया ग्रह

शिकागो (एएफपी)। हमारी पृथ्वी से 424 प्रकाश वर्ष दूर गर्म गर्द-गुबार के बीच धरती जैसा एक ग्रह आकार ग्रहण कर रहा है।

वैज्ञानिकों के मुताबिक एक करोड़ से 1.6 करोड़ वर्ष की उम्र वाले इस ग्रह का सौरमंडल अभी मुश्किल से किशोरावस्था में है। लेकिन जॉन हॉपकिन्स युनिवर्सिटी की एप्लाइड फिजिक्स प्रयोगशाला के मुखिया कैरी सिस्से के मुताबिक यह पृथ्वी जैसे ग्रह के जन्म लेने की बिल्कुल सही अवस्था है।

इस सौरमंडल के दो तारों में से एक के इर्दगिर्द धूल की गहरी रिंग बन गई है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह रिंग सौरमंडल के 'बसने योग्य' क्षेत्र में जमा हो रही है और एक दिन इस जगह पर धरती जैसा मिट्टी-पत्थर से बना ग्रह जन्म लेगा, जिसमें पानी भी मौजूद होगा। सिस्से कहते हैं कि सूर्य जैसे तारे के चारों ओर धूल की ऐसी पट्टियों का जन्म लेना बहुत दुर्लभ घटना है और इसके बाहर की ओर बर्फीली बेल्ट से यह संभावना बनती है कि एक दिन इस ग्रह में पानी भी मौजूद होगा। उन्होंने कहा कि ग्रह का रूप ले रही धूल उन्हीं पदार्थों से बनी है जिनसे हमारी पृथ्वी के क्रस्ट व कोर का निर्माण हुआ है। सिस्से के अनुसार इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि एक दिन वहां धरती जैसा जीवन भी पनपे। उन्होंने कहा कि यह धरती के जन्म की घटना को दोबारा देखने जैसा अनुभव है।

इस दुर्लभ ब्रह्मांडीय घटना की तस्वीरें नासा के स्पिट्जर स्पेस टेलिस्कोप ने उतारी हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक इन दृश्यों को धरती तक टेलिस्कोप तक पहुंचने में 424 वर्ष लग गए लेकिन एक नए ग्रह के जीवन की तुलना में यह पलक झपकने जैसा है। उन्होंने बताया कि इस ग्रह को हमारी पृथ्वी जैसा रूप ग्रहण करने में अभी और 10 करोड़ साल लग सकते हैं।

साभार : हिंदुस्तान, 5 अक्टूबर, 2007

प्रश्न :

(1) अंतरिक्ष की किस घटना से वैज्ञानिक उत्साहित हैं?

____

____

(2) पृथ्वी जैसा ग्रह बनने के लिए अंतरिक्ष में किस प्रकार की स्थिति होना आवश्यक है?

____

____

(3) रेखा खींचकर सही जोड़े मिलाइए :

४२४ प्रकाश वर्ष	नासा का टेलिस्कोप
१.६ करोड़ वर्ष	पृथ्वी से नए ग्रह की दूरी
१० करोड़ वर्ष	वैज्ञानिक
स्पिट्ज़र स्पेस	पूर्ण ग्रह बनने में लगनेवाला समय
कैरी सिस्से	नए ग्रह की उम्र

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. उदाहरण के आधार पर उपसर्ग लगाकर शब्द पुनः लिखिए :

(वि, प्र, अ, दुर्, अध्, निर्, गैर)

भिन्न – विभिन्न

देश – ____________

पका – ____________

गम – ____________

योग – ____________

जीव – ____________

बल – ____________

समझ – ____________

सुविधा – ____________

वांछित – ____________

2. उदाहरण के आधार पर प्रत्यय लगाकर शब्द पुनः लिखिए :

(ई, ता, इत, इक)

उदाहरण : नियम + इत = नियमित

विदेश – ____________

प्रकृति – ____________

पुत्र – ____________

लापरवाह – ____________

चंचल – ____________

यंत्र – ____________

मानव – ____________

हँस – ____________

3. चित्र के आधार पर काव्य की रचना कीजिए :

घड़ी लगी दीवार पर

टिक-टिक कर तू चलती है,

____

____

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. **देश की उन्नति, विकास एवं रक्षा के लिए आप क्या बनना चाहेंगे ''किसान या सैनिक''? कारण सहित अपने मित्र को पत्र द्वारा बताइए।**

भाषा-सज्जता

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और समझिए :**

(1) निधि बहुत काम करती है।

(2) रुद्र बहुत हँसता है।

(3) दिव्येश और चिराग बहुत घूमते हैं।

(4) जूही और रिया ने बहुत खरीदारी की।

(5) मुझे आज बहुत खुशी है।

(6) कल सविता बहुत हँसी थी।

ऊपर दिए वाक्य पढ़ने से पता चलता है कि रेखांकित शब्द '**बहुत**' में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, लिंग, वचन, काल, बदलने पर भी उस शब्द में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

> जिन पदों के रूप लिंग, वचन, काल या कारक के कारण नहीं बदलते अर्थात् जो सदैव एक से बने रहते हैं, उन्हें '**अव्यय**' (जिनमें व्यय न हो अर्थात् विकार या परिवर्तन न हो उसे अविकारी पद) कहा जाता है।

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और उनमें प्रयुक्त गाढ़े शब्दों पर ध्यान दीजिए :**

  - एक लड़का **धीरे-धीरे** चल रहा है।
  - एक लड़की **धीरे-धीरे** चल रही है।
  - कुछ लड़के **धीरे-धीरे** चल रहे हैं।
  - बहुत-सी लड़कियाँ **धीरे-धीरे** चल रही हैं।
  - मैं **धीरे-धीरे** चल रहा हूँ।
  - हम **धीरे-धीरे** चलेंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'धीरे-धीरे' शब्द ऐसा शब्द है, जिसका प्रयोग पुल्लिंग, एकवचन, एकवचन कर्ता (लड़का), स्त्रीलिंग, बहुवचन (लड़कियाँ) और अंतिम विधान में काल परिवर्तन हुआ है, फिर भी 'धीरे-धीरे' शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता। अत: धीरे-धीरे '**अव्यय**' है।

अव्यय शब्दों की सूची

और, तथा, अथवा, या, वाह ! अहा !, कल, अधिक, धीरे-धीरे, ऊपर

- **निम्नलिखित वाक्यों में से ऐसे पद ढूँढिए जो 'अव्यय' हैं :**

(1) उमंग और स्मित घर चले गए।

(2) तुम्हें अपने जन्मदिन पर कैमरा चाहिए या मोबाइल फोन ?

(3) वाह ! क्या कैच लिया है।

(4) दुर्योधन तथा कर्ण में गहरी मित्रता थी।

(5) वह तेज दौड़ा।

☞ **सोचिए :** आपने जिन शब्दों को अव्यय के रूप में चुना है, क्या वे अव्यय पद हैं? चर्चा कीजिए।

योग्यता-विस्तार

वाद-विवाद के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है:

- वक्ता को केवल अध्यक्ष को ही संबोधित करना चाहिए।
  (कार्यक्रम में किसी वरिष्ठ, सम्माननीय, अनुभवी व्यक्ति को अध्यक्ष बनाया जाता है।)
- वाद-विवाद में भाग लेते समय अशिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए तथा किसी भी प्रतियोगी पर व्यक्तिगत रूप से आक्षेप आदि नहीं करना चाहिए।
- विरोधी के तर्कों का खंडन तथा अपने कथन की पुष्टि करते समय शिष्टाचार का पालन करना चाहिए।
- विषय का प्रतिपादन तार्किक, क्रमबद्ध तथा प्रभावशाली होना चाहिए।
- वाद-विवाद में प्रत्येक वक्ता को अपनी बात कहने के लिए प्राय: 3 से 5 मिनट तक का समय दिया जाता है, अत: निर्धारित समय-सीमा में ही अपनी बात समाप्त कर लेनी चाहिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9 ममता

–जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30-01-1889 में वाराणसी में हुआ। प्रसादजी मूलतः कवि हैं। उन्होंने नाटक, कहानियाँ, निबंध और उपन्यास भी लिखे। उनकी रचनाओं में मुख्य रूप से भारत की ऐतिहासिक संस्कृति की झलक मिलती है। उनके प्रमुख नाटक हैं – 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी'। 'कामायनी' उनका सुप्रसिद्ध महाकाव्य है। उनका निधन 14-01-1937 को हुआ।

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित इस कहानी की नायिका ममता है। ममता विधवा है। रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि अपनी इस एकमात्र स्नेहपालिता पुत्री के दुःख से अत्यंत दुःखी है। वे उसका भविष्य सुरक्षित करने का प्रयास करते हैं, किंतु पिता द्वारा भिजवाए स्वर्ण उपहारों को ममता लौटा देती है। डोलियों में छिपकर बैठे पठान सैनिकों ने अगले ही दिन दुर्ग पर अधिकार कर लिया। चूड़ामणि वहीं मारे गए किंतु ममता वहाँ से सुरक्षित काशी के उत्तर में स्थित एक विहार में जा पहुँची और वहीं रहने लगी। लंबा समय बीत गया। अपनी झोंपड़ी में बैठी ममता दीप के आलोक में पाठ कर रही थी कि एक भीषण और हताश आकृति ने आश्रय माँगा। संकोचपूर्वक ममता ने अतिथि धर्म का पालन करते हुए उस पथिक को आश्रय दिया। वह पथिक कोई और नहीं, हुमायूँ था जिसने सुबह होने पर अपने एक सैनिक मिरज़ा को इस वृद्धा की टूटी झोंपड़ी बनवाने का आदेश दिया। ममता अब सत्तर वर्ष की हो चली थी। अचानक उसे एक अश्वारोही की आवाज़ सुनाई दी जो उसीकी झोंपड़ी के बारे में पता पूछ रहा था। ममता उस मुगल अश्वारोही को वह स्थान सौंपकर अनंत यात्रा पर चली गई, उस स्थान पर एक आकर्षक मंदिर बना जिसके शिलालेख पर सातों देश के नरेश हुमायूँ और उसके पुत्र अकबर का नाम तो था किंतु ममता का कहीं ज़िक्र तक न था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रोहतासदुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता शोण,के तीक्ष्ण गंभीर प्रवाह को देख रही थी, मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए वह विकल थी। वह रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की एकमात्र दुहिता थी। उसके लिए कोई अभाव होना असंभव था परंतु वह विधवा थी; उसकी विडंबना का अंत कहाँ था!

चूड़ामणि ने चुपचाप उस प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह और उसके कलनाद में ममता अपना जीवन मिलाने में बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेहपालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गए। ऐसा प्राय: होता, परंतु आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिंता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आए। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे। कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूमकर देखा। मंत्री ने सब थालों को रखने का संकेत दिया । अनुचर थाल रखकर चले गए।

ममता ने पूछा – ''यह क्या है पिताजी ?''

''तेरे लिए बेटी ! उपहार है! कहकर चूड़ामणि ने आवरण उलट दिया।''

स्वर्ण का पीलापन उस सुनहरी संध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी, ''इतना स्वर्ण ! यह कहाँ से आया ?''

''चुप रहो ममता... यह तुम्हारे लिए है !''

''तो क्या आपने शत्रु का उत्कोच स्वीकार कर लिया ? पिताजी, यह अनर्थ है, अर्थ नहीं!''

''लौटा दीजिए, पिताजी ! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे ?''

''इस पतनोन्मुख प्राचीन सामंत वंश का अंत समीप है बेटी ! किसी भी दिन शेरशाह रोहतास दुर्ग पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा... तब के लिए बेटी !''

''हे भगवान ! विपद के लिए इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हमें दो मुट्ठी अन्न न देगा ? यह असंभव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ ? इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''मूर्ख है ! कहकर चूड़ामणि चले गए।''

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता आ रहा था, मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक-धक करने लगा। वे अपने को रोक न सके। उन्होंने जाकर रोहतास दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा, ''यह महिलाओं का अपमान करना है।''

बात बढ़ गई। तलवारें खिंचीं, मंत्री वहीं मारे गए। राजा-रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गई ममता। डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्गभर में फैल गए परंतु ममता न मिली।

काशी के उत्तर में स्थित धर्मचक्र विहार, मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था। खंडित शिखरोंवाले भवन तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीन और ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चंद्रिका में स्वयं को शीतल कर रही थी।

जहाँ गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पंचवर्गीय भिक्षु पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी।

''**अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते...**''

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीपक के मंद प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बंद करना चाहा। परंतु उस व्यक्ति ने कहा, ''माता! मुझे आश्रय चाहिए।''

''तुम कौन हो?!'' स्त्री ने पूछा।

''मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।''

''क्या शेरशाह से ?'' स्त्री ने अपने ओठ काट लिए।

''हाँ, माता !''

''परंतु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिंब तुम्हारे मुख पर भी है सैनिक ! मेरी कुटी में स्थान नहीं। जाओ, कहीं दूसरा आश्रय खोज लो !''

''गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर गए हैं, इतना थका हुआ हूँ... इतना...'' कहते-कहते वह व्यक्ति धम्म से बैठ गया। उसके सामने पूरा ब्रह्मांड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आई ! उसने जल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी कि ये सब दया के पात्र नहीं... मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी ! घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा, ''माता ! तो फिर मैं यहाँ से चला जाऊँ ?''

स्त्री विचार कर रही थी, 'मैं ब्राह्मणी हूँ। मुझे तो अपना धर्म 'अतिथिदेव के सत्कार' का. पालन करना चाहिए । परंतु यहाँ नही नहीं. ये सब दया के पात्र नहीं। परंतु यह दया तो नहीं... कर्तव्य करना है। तब? मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा, ''क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल न करो; ठहरो !''

''छल ! नहीं, तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ, भाग्य का खेल है।''

ममता ने कहा, ''यहाँ कौन दुर्ग है ! यही झोंपडी न, जो चाहे ले लो, मुझे तो अपना कर्तव्य निभाना पड़ेगा। जाओ भीतर, थके हुए पथिक ! तुम चाहे कोई भी हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ।'' सब अपना धर्म छोड़ दे तो क्या मैं भी छोड़ दूँ।'' मुगल ने चन्द्रमा के मंद प्रकाश में वह महिमामय मुखमंडल देखा, उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवारों में चली गई। भीतर, थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रभात में खँड़हर की संधि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रांत में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर स्वयं को कोसने लगी।

एकाएक झोंपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा, ''मिरज़ा, मैं यहाँ हूँ !''

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रांत गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई, पथिक ने कहा, ''वह स्त्री कहाँ हैं? उसे खोज निकालो ! ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई, वह मृग-दाव में चली गई। दिनभर उसमें से न निकली। संध्या हो गई, वे लोग जाने लगे। ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा था, ''मिरज़ा, उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका, उसका घर बनवा देना क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया या। यह स्थान भूलना मत।'' इसके बाद वे वहाँ से चले गए।

❄ ❄ ❄

''चौसा के मुगल-पठान युद्ध को बहुत दिन बीत गए। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। एक दिन वह अपनी झोंपड़ी में पड़ी थी। शीतकाल का प्रभाव था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ घेरकर बैठी थीं, क्योंकि ममता आजीवन सबके सुख-दु:ख की सहभागिनी रही थी।

ममता ने जल पीना चाहा, एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखाई पड़ा । वह अपनी धुन में कहने लगा।'' मिरज़ा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए। वह बुढ़िया मर गई होगी, अब किससे पूछूँ कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे ? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई।''

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा, ''उसे बुलाओ !''

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा, ''मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल, पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था! भगवान ने सुन लिया, आज मैं इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर विश्रामगृह में जाती हूँ।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बुढ़िया के प्राण-पखेरू उड़ गए। वह अश्वारोही अवाक् खड़ा रह गया।

वहाँ एक अष्टकोण मंदिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया –

''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह विशाल गगनचुंबी मंदिर बनवाया।'' पर उसमें ममता का कहीं नाम न था।

शब्दार्थ

प्रकोष्ठ भवन के फाटक के पास का कमरा **तृण-गुल्म** घास का समूह, झाड़ी **तीक्ष्ण** तेज़ **प्रवाह** बहाव **वेदना** पीड़ा, दु:ख **विकल** बैचेन **व्यथित** पीड़ित **दुहिता** पुत्री, कन्या **विकीर्ण होना** फैल जाना **उत्कोच** घूस-रिश्वत **प्राचीर** चारदीवारी **विभूति** समृद्धि, प्रभुता **विपन्न** संकटग्रस्त **आततायी** अन्यायी **विरक्त** खिन्न, दु:खी **मृग-दाव** शिकारियों के भय से मृगों के छिपने का वह वन जिसमें पर्याप्त मृग हो **जीर्ण** वृद्ध, जर्जर, टूटा-फूटा

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) प्रसादजी ने ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति किसे कहा ?

(2) शहंशाह हुमायूँ के आदेश का किस प्रकार पालन हुआ ? वह सही था या गलत ? अपने विचारों में स्पष्ट कीजिए।

(3) कहानी के आधार पर मुख्य पात्र ममता के बारे में कहिए।

(4) कहानी के अंतिम वाक्य को हटाकर कहानी का अंत अपने अनुसार कहिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) ममता को प्रत्येक लड़नेवाले सैनिक से नफरत क्यों थी ?

(2) ममता की झोंपड़ी में आश्रय माँगने कौन आया?

(3) अकबर ने अष्टकोण मंदिर कब और कहाँ बनवाया ?

(4) घोड़े पर सवार होते हुए पथिक ने मिरज़ा से क्या कहा?

(5) किस बात से पता चलता है कि ममता सबके सुख-दु:ख की सहभागिनी थी ?

2. नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देश के अनुसार भिन्न-भिन्न कालों में परिवर्तन कीजिए :

(1) तेनालीरामन के बारे में अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। (भूतकाल)

(2) सुबह होने पर हिना अपने बेटे को साथ लेकर उद्यान में गई। (भविष्यकाल)

(3) प्रिया का गृहकार्य जल्दी समाप्त हो गया। (भविष्यकाल)

(4) हर्ष आज उपवास करेगा। (भूतकाल)

(5) मनोज अक्सर जागता रहता था। (वर्तमानकाल)

3. शब्दों के अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) दुहिता (2) वेदना (3) उत्कोच (4) जीर्ण (5) आततायी

4. नीचे लिखी कहानी एकवचन में है। इसे बहुवचन में लिखकर उच्च स्वर में पढ़िए :

एक चिड़िया पेड़ पर रहती थी। उसका घोंसला जंगल के पास था। घोंसले में उसके तीन बच्चे थे। वह अपने बच्चों के साथ रहती थी। एक दिन एक शिकारी वहाँ आया। वह चिड़िया को मारना चाहता था। चिड़िया ने बच्चों को घोंसले में सिर नीचा कर बैठने को कहा। वह खुद वहाँ से उड़ गई और पत्तों में छिपकर बैठ गई, शिकारी चिड़िया को न देख वहाँ से चला गया।

उदा: **अनेक चिड़ियाँ पेड़ों पर रहती थीं।** ____________________

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. **नीचे शरीर के कुछ अंगों के चित्र दिए गए हैं। प्रत्येक अंग से संबंधित तीन-तीन मुहावरे अर्थ सहित लिखकर वाक्य में प्रयोग करें :**

	मुहावरा	अर्थ	वाक्य प्रयोग
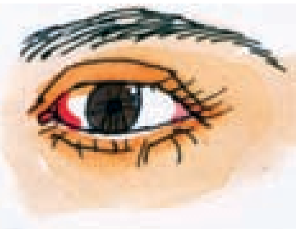	...आँखों का तारा. होना...	...बहुत प्यारा...	मेरा बेटा मेरी आँखों का तारा है ।

6. **रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए :**

एक निर्दयी राजा – गुलाम को दंड – गुलाम का जंगल में भाग जाना – सिंह से भेंट – सिंह के पैर से काँटा निकालना – सिंह से मित्रता – गुलाम की गिरफ्तारी – फाँसी की तैयारी – उसे भूखे सिंह के सामने छोड़ना – सिंह का स्नेहपूर्ण व्यवहार – दोनों की रिहाई – सीख।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. चित्र के आधार पर कहानी लिखिए :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. नीचे दिए गए शब्दों में से संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण पहचान कर वर्गीकृत कीजिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(हिमालय, मुझे, खट्टा, तुम्हें, बड़ौदा, सपना, साबरमती, सुंदर, छोटा, होशियार, हमारा, गुजरात)

योग्यता-विस्तार

- "जयशंकर प्रसादजी" की कहानियाँ पढ़िए।
- कहानियों का संकलन कीजिए।
- कहानियों को बुलेटिन बोर्ड (भीतिपत्र) पर रखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com